केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आर्मत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 85 शुक्रवार 18 अक्टूबर 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

दानपात्र से पैसा और नोटों की माला चोरी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। नगर थानाक्षेत्र के गोटवा बाजार में स्थापित दुर्गा प्रतिमा पंडाल में रखे दानपात्र से पैसा व प्रतिमा के गले में पड़े नोटों की माला चोरी हो गई। सुबह लोगों को घटना की जानकारी हुई। गोटवा बाजार निवासी अनिल जायसवाल ने बताया कि उन्होंने घर के बाहर दुर्गा प्रतिमा स्थापित किया है। रात करीब 12 बजे तक कार्यक्रम चलता रहा। इसके बाद सब लोग सोने चले गए। रात दो और तीन बजे के बीच पंडाल से किसी ने दानपात्र से करीब तीन हजार रुपये व दुर्गा प्रतिमा के गले में मौजूद तीन हजार रुपये की माला चोरी कर ली। सुबह इसकी जानकारी हुई। नगर पुलिस का कहना है कि इस संबंध में कोई सूचना थाने पर नहीं दी गई है।

बिना डोनर के मिलेगा ब्लड

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। जिला अस्पताल के ब्लड बैंक के मेडिकल ऑफिसर डॉ. दीपक श्रीवास्तव ने बताया कि 'ए' पॉजिटिव की छह यूनिट 23 अक्टूबर, 'ओ' पॉजिटिव की 21 यूनिट 27 अक्टूबर, 'बी निगेटिव की एक यूनिट 21 अक्टूबर तथा दो यूनिट 22 अक्टूबर के बाद एक्सपॉयर हो रही है। यह होल ब्लड बिना किसी डोनर के मरीज को उपलब्ध कराया जाएगा। इसके लिए पूरी तरह से भरा हुआ अस्पताल की ओर से जारी डिमांड–पत्र पर खून मुहैया कराया जाएगा। इच्छुक व्यक्ति जिला अस्पताल के ब्लड बैंक से संपर्क कर सकते हैं।

अप्राकृतिक दुष्कर्मका आरोपी गिरफ्तार

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। हरैया पुलिस ने 10 साल के बालक संग गलत काम करने के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पीड़िता के चाचा ने तहरीर में बताया है कि उनके 10 वर्षीय भतीजे को सोमवार को दिन में आरोपी युवक देवांश बहलाकर अपने साथ सूनसान जगह पर ले गया। यहां उसके साथ अप्राकृतिक दुष्कर्म किया। घटना की जानकारी होने पर परिजनों ने थाने पर शिकायत की। पुलिस ने बीएनएस की धारा 96 व पॉक्सो एक्ट के तहत केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

ऑटो पलटने से महिला की मौत 10 घायल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। दुर्गापूजा मेला देखकर लौट रहे श्रद्धालुओं से भरी ऑटो रिक्शा नगर थानाक्षेत्र के फुटहिया फ्लाईओवर के पास सर्विस रोड पर गड्ढे में फंसकर पलट गई। हादसे में ऑटो सवार 10 लोग घायल हो गए। सूचना पर पहुंची एंबुलेंस के कर्मचारियों ने घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। यहां एक महिला की हालत गंभीर देख चिकित्सक ने मेडिकल कॉलेज बस्ती रेफर कर दिया। यहां से बीआरडी मेडिकल कॉलेज गोरखपुर रेफर महिला ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया है। नगर थानाक्षेत्र के बर्कीनिया द्वीप निवासी सीमा (30) पत्नी मनोज कुमार व उनकी बेटी विंध्यवासिनी, रंजना, बेटा हिमांशु के अलावा शीला देवी (25) पत्नी संदीप कुमार, उनकी बेटी प्रज्ञा, महक, बीरालाल (60), सृष्टि, निधि पुत्री राम अजोर मंगलवार को एक ही ऑटो रिक्शा में सवार होकर दुर्गा पूजा देखने आए थे।

मेला देखने के बाद देर रात सभी ऑटो रिक्शा से लौट रहे थे। जैसे ही नगर थानाक्षेत्र के फुटहिया सर्विस रोड पर पहुंचे। तभी सड़क में बने गड्ढे में ऑटो का पहिया चला गया। जिससे अनियंत्रित होकर ऑटो रिक्शा सड़क के नीचे जाकर पलट गया। ऑटो सवार लोगों की चीख–पुकार सुन आसपास लोग दौड़े और उन्हें बाहर निकाला। घायलों को एंबुलेंस की मदद से अस्पताल भेजा गया। गंभीर रूप से चोटिल सीमा देवी को चिकित्सक ने मेडिकल कॉलेज से गोरखपुर रेफर दिया। गोरखपुर जाते वक्त रास्ते में उनकी मौत हो गई।

यूपी में उपचुनाव को एक हफ्ते टालने के लिए चुनाव आयोग पहुंची भाजपा

लखनऊ (आभा)। उत्तर प्रदेश में नौ सीटों पर होने वाले उपचुनाव को एक हफ्ते टालने के लिए बीजेपी चुनाव आयोग पहुंची है। बीजेपी ने 13 नवंबर की जगह 20 नवंबर को वोटिंग कराने की मांग की है। बीजेपी ने यूपी के मुख्य निर्वाचल अधिकारी इस बाबत पत्र लिखा है। पत्र में कई जिलों का जिक्र करते हुए बताया है कि 15 नवंबर को कार्तिक पूर्णिमा का स्नान पर्व होने के कारण लोग दो तीन दिन पहले ही इसमें भागीदारी करने चले जाएंगे। ऐसे में बहुसंख्यक मतदाता वोट देने से वंचित रह जाएंगे।

गौरतलब है कि दो दिन पहले ही चुनाव आयोग ने यूपी की दस में से नौ सीटों पर चुनाव की घोषणा की थी। आयोग के अनुसार 18 नवंबर को नामांकन के साथ चुनावी प्रक्रिया शुरू होगी। 13 नवंबर को वोटिंग और 23 नवंबर को मतगणना होगी।

यूपी के मुख्य निर्वाचन अधिकारी को लिखे पत्र में बीजेपी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में कार्तिक पूर्णिमा के स्नान पर्व और पूजन का धार्मिक महत्व है। 15 नवम्बर 2024 को कार्तिक पूर्णिमा का स्नान पर्व है और बड़ी संख्या में लोग कार्तिक पूर्णिमा के स्नान एवं पूजन करने के लिए जाते हैं। 13 नवंबर को चुनाव होने से उन्हें जाने में परेशानी हो सकती है।

बीजेपी ने यह भी कहा कि इसके साथ कुन्दरकी, मीरापुर, गाजियाबाद और प्रयागराज में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर मेला में प्रतिमाग एवं पूजन के लिए लोग 3–4 दिन पहले ही चले जाते है। कार्तिक पूर्णिमा के कारण बहुसंख्यक मतदाता मतदान से वंचित हो जाएंगे। आयोग का भी मानना है कि प्रत्येक मतदाता का शत–प्रतिशत मतदान कराया जाये। ऐसी स्थिति में शत–प्रतिशत मतदान सम्भव नहीं है इसीलिए उपचुनाव की तारीख 13 नवम्बर 2024 के स्थान 20 नवम्बर 2024 करना बेहतर होगा। इससे प्रत्येक मतदाता मतदान कर सकेंगे।

बहराइच हिंसा में आरोपी सरफराज और तालिब मुठभेड़ में गिरफ्तार

बहराइच (आभा)। बहराइच हिंसा में राम गोपाल हत्याकांड मामले में यूपी एसटीएफ और यूपी पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस ने हिंसा के मुख्य आरोपी सरफराज और तालिब को एनकाउंटर में गिरफ्तार कर लिया है। एनकाउंटर के दौरान दोनों आरोपियों के पैर में गोली मारी गई है। गोली लगने से घायल दोनों आरोपियों को पुलिस ने नानपारा सीएचसी में भर्ती कराया, यहां से उन्हें जिला अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों के अनुसार सरफराज की हालत गंभीर बताई जा रही है।

बहराइच के महाराजगंज हिंसा मामले में रामगोपाल को गोली मारने वाले मुख्य आरोपी सरफराज व उसके बड़े भाई तालिब के साथ गुरुवार को एसटीएफ और पुलिस की मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ नानपारा कोतवाली क्षेत्र कुर्मीनपुरवा हांडा बसरी लगभग दोपहर 2 बजे के आसपास होना बताया जा रहा है। पुलिस को सूचना मिली थी कि दोनों आरोपी नेपाल भागने की फिराक में हैं। इसके बाद पुलिस ने दोनों की गिरफ्तारी के लिए घेराबंदी कर दी। पुलिस और एसटीएफ के बीच घिरा देखकर सरफराज और तालिब ने गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस और एसटीएफ ने भी जवाबी कार्रवाई की, जिसमें सरफराज के बाएं और तालिब के दाहिने पैर में गोली मारी गई।

गोली लगने से घायल दोनों आरोपियों को पुलिस एंबुलेंस से नानपारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर ले जाया गया। यहां प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है।

हरियाणा में लगातार दूसरी बार नायब सरकार

अनिल विज सहित 13 मंत्रियों ने लिया शपथ

चंडीगढ़ (आभा)। हरियाणा में नायब सिंह सैनी ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली है। सैनी ने लगातार दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली है। नायब सैनी के साथ 13 मंत्रियों ने भी शपथ ली। पीएम मोदी शपथ ग्रहण समारोह में मौजूद रहे।

सीएम सैनी के बाद क्रमशः अनिल विज, कृष्ण लाल पंवार, राव नरबीर, महिपाल ढांडा, विपुल गोयल, अरविंद शर्मा, श्याम सिंह राणा, रणबीर गंगवा, कृष्ण कुमार बेदी, श्रुति चौधरी, आरती राव, राजेश नागर व गौरव गौतम ने शपथ ली।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और अन्य मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, एनडीए नेता पंचकूला में हरियाणा के मुख्यमंत्री–नायब सिंह सैनी के शपथ ग्रहण समारोह में मौजूद रहे।

कार्यशाला में भाजपा की सक्रिय सदस्यता बढाने पर जोर

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। गुरुवार को भारतीय जनता पार्टी द्वारा रुधौली विधानसभा क्षेत्र के सल्टौआ, सोनहा, रामनगर, रुधौली, पकरीजई और हनुमानगंज मंडल में सक्रिय सदस्यता अभियान की एक दिवसीय कार्यशाला संपन्न हुआ। जिसमें भाग लेने के लिए सभी मंडलों की स्थानीय इकाई पदाधिकारी एवं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं सम्मिलित हुए।

मुख्य वक्ता सक्रिय सदस्यता जिला प्रमुख पवन कसौधन ने कहा कि जिले में पार्टी संगठन की योजनानुसार कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम करते हुए सदस्यता अभियान में सहभागिता की। उन्होंने कहा कि प्राथमिक सदस्यता के अभियान में जिस तरह से पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने अपनी भूमिका का निर्वहन किया। उसी तरह सक्रिय सदस्यता के अभियान में भी सबको सक्रिय भागीदारी निभानी होगी।

ब्लॉक प्रमुख रामनगर पूर्व जिलाध्यक्ष यशकांत सिंह ने कहा कि सक्रिय सदस्यता अभियान पार्टी संगठन के नए गठन हेतु बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। हर बूथ पर कम से कम दो सक्रिय सदस्य होने आवश्यक है। सक्रिय सदस्यता का अभियान 16 अक्टूबर से प्रारम्भ हुआ है। जो कि 31 अक्टूबर तक चलेगा। कहा कि भाजपा फिर एक बार दुनिया की सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी बनने जा रही है। कार्यक्रम का संचालन जिला कार्य समिति सदस्य नितेश शर्मा ने किया। इस अवसर पर कार्य समिति सदस्य राकेश शर्मा, मंडल अध्यक्ष रामनेवास गिरी, श्यामनाथ चौधरी, सुजीत सोनी, ओमप्रकाश शुक्ल, प्रशांत सिंह, विजय तिवारी, मनोज ठाकुर, रामउग्रह जायसवाल, सुनील पांडेय, चंद्रभान गुप्ता, मगन शुक्ल, सुरेश भट्ट, कृपाशंकर श्रीवास्तव, इंद्रसेन उपाध्याय, हरिश्चंद्र मिश्र, विश्वनाथ पासवान, गिरजेश मिश्र, अनिल सिंह, शिवम श्रीवास्तव, गिरजेश यादव उपस्थित रहे।

1.86 करोड़ परिवारों के लिए मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर का वितरण शुरू

लखनऊ (आभा)। उत्तर प्रदेश सरकार ने दिवाली के मौके पर राज्य के 1.86 करोड़ परिवारों के लिए मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर का वितरण शुरू कर दिया है। योगी सरकार की तरफ से गुरुवार को यहां जारी एक बयान में यह जानकारी दी गई। बताया गया कि योगी सरकार ने 1,890 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। राज्य सरकार ने पिछले साल 85 लाख से अधिक महिलाओं सहित 1.85 करोड़ परिवारों को मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर वितरित किये थे।

बयान के मुताबिक प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत होली और दीपावली के त्योहारों के दौरान राज्य में दो साल से मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर वितरित किए जा रहे हैं। उज्ज्वला योजना के तहत केंद्र सरकार हर लाभार्थी को 300 रुपये की सब्सिडी देती है जबकि राज्य सरकार बाकी छूट को वहन करती है। भाजपा सरकार ने पिछले विधानसभा चुनाव के दौरान होली–दिवाली पर मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर बांटने का वादा किया था। इसी के तहत सरकार बनने पर इस योजना की शुरुआत की गई थी।

बिहार में जहरीली शराब से 30 की मौत

पटना (आभा)। बिहार के सीवान और छपरा में जहरीली शराब पीने से मौत का मामला सामने आया है. एसपी ने 20 लोगों की मौत की पुष्टि की है. सिविल सर्जन के द्वारा जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि जहरीली शराब पीने से अब तक 20 लोगों की मौत हो चुकी है. मरने वाले लोगों में छपरा के 8 लोग शामिल हैं. शराब पीने से तबीयत खराब होने के बाद लोगों को हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां पर उनकी मौत हो गई।

पत्रकारों से बात करते हुए सीवान के जिलाधिकारी मुकुल कुमार गुप्ता ने कहा, बुधवार सुबह करीब साढ़े सात बजे जानकारी मिली कि मगहर और औरिया पंचायतों में रहस्यमय परिस्थितियों में तीन लोगों की मौत हो गई है. अधिकारियों की एक टीम तुरंत इलाके में भेजी गई और 12 और लोगों को इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल भेजा गया, लेकिन उनमें से एक व्यक्ति की रास्ते में ही मौत हो गई।बता दें कि जहरीली शराब से होने वाली मौतों की तादाद बढ़ती जा रही है।

प्रदीप सिंह 'पिकूं' अध्यक्ष, रामतीरथ निर्विरोध उपाध्यक्ष निर्वाचित

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सहकारी गन्ना विकास समिति लिमिटेड बस्ती प्रबन्ध कमेटी के चुनाव में प्रदीप सिंह 'पिकूं' निर्विरोध अध्यक्ष, रामतीरथ उपाध्यक्ष निर्वाचित किये गये हैं। परिणाम की घोषणा होते ही गुरुवार को कोतवाली बस्ती के निकट स्थित समिति के कार्यालय में उपस्थित लोगों ने प्रदीप सिंह 'पिकूं' और रामतीरथ को फूल मालाओं से लाद दिया। प्रदीप सिंह 'पिकूं' ने कहा कि उन्हें जो दायित्व मिला है पूरा प्रयास होगा कि सहकारी गन्ना विकास समिति लिमिटेड बस्ती के माध्यम से गन्ना किसानों को बेहतर सुविधायें उपलब्ध करायी जाय।

भारतीय जनता पार्टी ने सहकारी गन्ना विकास समिति लिमिटेड बस्ती के चुनाव हेतु सिद्धार्थनगर जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष कुंवर विक्रम सिंह और भाजपा के वरिष्ठ नेता सत्येन्द्र सिंह 'भोलू' को प्रभारी के रूप में दायित्व सौंपा था। इनके प्रयास से 11 निर्विरोध डायरेक्टर निर्वाचित हुये और डायरेक्टरों ने प्रदीप सिंह 'पिकूं' को अध्यक्ष और रामतीरथ को निर्विरोध उपाध्यक्ष चुना। भाजपा को मिली इस जीत पर पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी, जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र, जिला सहकारी बैंक बस्ती के चेयरमैन राजेन्द्रनाथ तिवारी, कुंवर शिवेंद्र सिंह, सत्यराम चौधरी, गोकुल प्रसाद, रुकुमसेन सिंह, केशमती, कबूतरा, सतीश सिंह, राघवेन्द्र पाल, राघव प्रसाद, राजेन्द्र प्रसाद राजभर, संजय सिंह, उपेन्द्र सिंह, अनिल सिंह, गोलू सिंह, गौरीश, चन्द्रशेखर सिंह, हरीश सिंह, नन्हें उपाध्याय, संजय उपाध्याय, दिवाकर मिश्र के साथ ही भाजपा के अनेक नेताओं, कार्यकर्ताओं ने प्रसन्नता व्यक्त किया है।

जयन्ती पर याद किये गये सर सैयद अहमद खान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । कबीर साहित्य सेवा संस्थान द्वारा गुरूवार को कलेक्ट्रेट परिसर में अध्यक्ष साईमन फारूकी के संयोजन में सर सैय्यद उे उत्साह के साथ मनाया गया।

मुख्य अतिथि वरिष्ठ चिकित्सक डा. वी.के. वर्मा ने कहा कि सर सैयद अहमद खान 17 अक्टूबर 1817 को दिल्ली के एक प्रतिष्ठित सादात (सैयद) परिवार में पैदा हुए। बचपन से ही वे बहुत प्रतिभाशाली और गंभीर स्वभाव के थे, उम्र के साथ धीरे–धीरे उन्होंने एक महान विद्वान एवं समाज सेवक के रूप में ख्याति प्राप्त की। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक सर सैयद अहमद खान सबसे करिश्माई और दूरदर्शी व्यक्ति के रूप में उभरे और विश्व पटल पर उनकी एक अलग पहचान बन गयी।

कहा कि उन्होंने भारतीय समाज विशेष रूप से भारतीय मुस्लिम समुदाय के लिए आधुनिक शिक्षा की आवश्यकता को महसूस किया. सर सैयद अहमद खान यह बात अच्छी तरह जान चुके थे कि सशक्तीकरण केवल ज्ञान, जागरूकता, उच्च चरित्र, अच्छी संस्कृति और सामाजिक पहचान से ही आ सकती है। ज्ञान के क्षेत्र में उनका योगदान सदैव याद किया जायेगा।

डा. वाहिद अली सिद्दीकी ने सर सैयद अहमद खान के योगदान पर चर्चा करते हुये कहा कि उन्होने पारंपरिक शिक्षा के स्थान पर आधुनिक ज्ञान हासिल करने के लिए प्रेरित किया, क्योंकि वह जानते थे कि आधुनिक शिक्षा के बिना प्रगति संभव नहीं है. सर सैयद अहमद खान अपने आलोचकों चाहे वे मुसलमान हों या हिंदू के द्वारा उठाये गए सवालों का जवाब नहीं दिया करते, केवल अपने काम पर ध्यान केंद्रित रखते। सर सैयद अहमद खान ने सदा ही यह बात अपने भाषणों में कही थी कि, 'हिंदू और मुसलमान भारत की दो आंखें हैं, अगर इनमें से एक आंख थोड़ी सी भी खराब हो गयी तो इसकी सुंदरता जाती रहेगी।

अध्यक्षता करते हुये साहित्यकार फूलचन्द चौधरी ने कहा कि सर सैयद अहमद खान को एक युग पुरुष के रूप में याद किया जाता है और हिंदू तथा मुसलमान दोनों ही उनका आदर करते हैं। आभार ज्ञापन आयोजक साईमन फारूकी ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से कृष्ण चन्द्र पाण्डेय, ऋतुराज, एस.के. यादव, सिराज अहमद इदरीसी, अशद बस्तवी, दीपक सिंह प्रेमी नीरज वर्मा, दीनानाथ यादव, दीन बन्धु उपाध्याय आदि शामिल रहे।

महर्षि वाल्मीकि को जयन्ती पर समाजवादियों ने किया नमन्

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । गुरूवार को समाजवादी पार्टी कार्यालय पर महर्षि वाल्मीकि जयन्ती मनायी गई। सपा नेताओं कार्यकर्ताओं ने रामायण जैसे महान ग्रंथ की रचना करने वाले महर्षि वाल्मीकि के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन् किया। समाजवादी पार्टी जिलाध्यक्ष एवं बस्ती सदर विधायक महेन्द्रनाथ यादव ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि का प्राचीन वैदिक काल के महान ऋषियों में प्रमुख स्थान हैं। इन्होंने संस्कृत मे महान ग्रंथ रामायण महान ग्रंथ की रचना कि थी ,इनके द्वारा रचित रामायण वाल्मीकि रामायण कहलाती है। हिंदु धर्म की महान कृति रामायण महाकाव्य श्रीराम के जीवन और उनसे संबंधित घटनाओं पर आधारित है। उनकी कृतियां युगों से भारतीय मनीषा को श्रीराम चरित से परिचित कराती है।

पूर्व विधायक राजमणि पाण्डेय, जावेद पिण्डारी, मो. स्वालेह, सुरेन्द्र सिंह 'छोटे', अरविन्द सोनकर, आदि ने कहा कि भगवान वाल्मीकि जी के अनुसार संसार का मूल आधार ज्ञान ही है अर्थात शिक्षा के बिना मानव जीवन व्यर्थ और अर्थहीन है क्योंकि जीवन की भूल–भुलैया के चक्रव्यूह से शिक्षित व्यक्ति का ही बाहर निकलना संभव तथा आसान होता है। इनकी शिक्षाओं में अस्त्र–शस्त्र, ज्ञान–विज्ञान, राजनीति तथा संगीत के अलावा आदर्श सेवक, आदर्श राजा, आदर्श प्रजा का ही नहीं, आदर्श शत्रु का भी वर्णन मिलता है। आज भी इनकी शिक्षाएं पूरी दुनिया को मानवता, प्रेम व शांति तथा सहनशीलता का संदेश देती हैं और हिंसा, शत्रुता व युद्ध के होने वाले भयंकर विनाश के दुष्परिणामों से बचने का संकेत करती हैं। जयन्ती पर महर्षि वाल्मीकि को नमन् करने वालों में मुख्य रूप से मो. हाशिम, पंकज निषाद, संजय कुमार गौतम, विवेक यादव, जगदीश यादव, मुरलीधर पाण्डेय, राजाराम यादव, गौरीशंकर यादव, जयराज यादव, शाहुल यादव, प्रमोद यादव, जितेन्द्र यादव, उमर खान, गुलाम गौस, मन्नू सिंह, मनोज यादव, राजेश पटेल, दिनेश तिवारी, रमेश गौतम, अंकित कुमार पाण्डेय, यूनुस आलम खान, भोला पाण्डेय, राहुल सिंह, गिरीश चन्द्र, अजय यादव, शकुन्तला चौरसिया, राम प्रकाश चौधरी, प्रशान्त यादव, पवन कुमार चौधरी, कक्कू शुक्ल, अशोक कुमार यादव, अकबर अली, आमिश, हरीश, इन्द्रेश चौधरी, ज्ञानदास, वीरू विश्वकर्मा, रमेश गौतम, इरशाद अहमद आदि शामिल रहे।

नम आंखों से देवी प्रतिमाओं को दिया विदाई

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। जिले के शहर समेत कुछ ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न स्थानों पर स्थापित मां दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन गुरुवार को विभिन्न नदियों के घाटों और पोखरों में मां भक्तों ने जय माता दी के उद्घोष के साथ नम आंखों से किया । गुरुवार की सुबह आरती संग प्रतिमा विसर्जन की तैयारी में श्रद्धालु जुट गए। जिले में इस बार कुल 2255 दुर्गा प्रतिमाओं की स्थापना की गई थी। इनमें से 1856 का विसर्जन दशहरा के दिन से लेकर चतुर्थी तक कर दिया गया था। शेष लगभग 400 प्रतिमाओं का विसर्जन गुरुवार को अमहट घाट के साथ ही अन्य स्थानों पर शुरू हुआ। सर्वाधिक 200 से अधिक प्रतिमाओं का विसर्जन बस्ती शहर के अमहट घाट पर होगा। इनमें कोतवाली, पुरानी बस्ती क्षेत्र के साथ ही नगर और वाल्टरगंज थानाक्षेत्र की प्रतिमाएं शामिल हैं।

नगर पालिका अमहट घाट पर

– पुलिस सकिय, ड्रोन कैमरे से निगरानी

रोशनी और बैरीकेडिंग की व्यवस्था में जुटी है। प्रशासन की ओर से नाव के पर्याप्त इंतजाम किए गए हैं। लाइफ जैकेट के साथ गोताखोर भी मौजूद रहे। बोट लगाए गए थे। एडीएम प्रतिपाल चौहान, एएसपी ओपी सिंह, एसडीएम शत्रुघ्न पाठक, सीओ सिटी सत्येन्द्र भूषण तिवारी ने मय फोर्स अमहट घाट का निरीक्षण कर सुरक्षा इंतजामों का जायजा लिया।

देवी प्रतिमाओं के विर्सजन के दौरान श्रद्धालु भावुक थे। डीजे की धुनों पर कुछ लोग नाच गा रहे थे। प्रशासन की ओर से सुरक्षा के समुचित प्रबन्ध किये गये थे।

अपर पुलिस अधीक्षक ओम प्रकाश सिंह की अध्यक्षता में समस्त क्षेत्राधिकारीगण की उपस्थिति में मेला एवं प्रतिमा विसर्जन को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु पुलिस लाईन सभागार में ड्यूटी में लगे समस्त पुलिस अधिकारी, कर्मचारीगण को ब्रीफिंग करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। सभी को अपने अपने ड्यूटी स्थल पर मौजूद रहकर सतर्कता पूर्वक ड्यूटी करने हेतु, महिलाओं, वृद्धों एवं बच्चों के साथ सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करने, मार्ग में पड़ने वाले पूजा स्थल पर निगरानी रखते हुए तत्परता से ड्यूटी करने हेतु निर्देशित किया गया।

विसर्जन घाट पर फ्लड पीएससी एवं पीएसी की कंपनी तथा एसडीआरएफ की टीम विसर्जन के लिए मौजूद थी। फायर टेंडर की व्यवस्था खोया पाया केंद्र एंबुलेंस एवं चिकित्सा की सुविधा है। अमहट घाट पर मेला कंट्रोल रूम बनाया गया सीसीटीवी कैमरे एवं ड्रोन कैमरे के माध्यम से इसकी निगरानी की जाएगी।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 18 अक्टूबर 2024 शुक्रवार

सम्पादकीय

जम्मू-कश्मीर में लोकतंत्र का नया युग

आखिरकार तमाम ऊहापोह, सुरक्षा चुनौतियों तथा विदेशी दखल की तमाम आशंकाओं को निर्मूल करते हुए जम्मू–कश्मीर के जनमानस ने स्पष्ट सरकार बनाने का जनादेश दिया है। जनता ने विकास और शांति की आकांक्षा के साथ दिल खोलकर मतदान किया और अपनी उम्मीदों की सरकार चुनी है। घाटी में दशकों तक अब्दुल्ला परिवार के शासन के अनुभव के मद्देनजर घाटी के लोगों ने नेशनल कॉन्फ्रेंस पर भरोसा जताया। बुधवार को उमर अब्दुल्ला ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। उनकी सार्थक पहल यह रही कि उन्होंने जम्मू–कश्मीर की राजनीति के दो ध्रुव बने कश्मीर घाटी व जम्मू क्षेत्र के जनमानस को साथ लेकर चलने का संकल्प दोहराया है। इस कड़ी में उमर अब्दुल्ला ने सुरिंदर चौधरी को राज्य का उप मुख्यमंत्री नियुक्त किया है। उमर ने कहा भी कि 'चौधरी को मैंने इसलिए उप मुख्यमंत्री बनाया, ताकि जम्मू के लोगों को महसूस हो सके कि उनकी भी राज्य की सत्ता में घाटी जितनी भागीदारी है। आगे भी ऐसे ही प्रयास होते रहेंगे।' निस्संदेह, यह सकारात्मक राजनीति का उज्ज्वल पक्ष है, सबको साथ लेकर आगे बढ़ने का। उल्लेखनीय है कि सुरिंदर चौधरी जम्मू से चुनकर आए हैं। नौशेरा से विधायक बने सुरिंदर चौधरी ने विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के प्रांत अध्यक्ष रवींद्र रैना को हराया था। बहरहाल, भले ही अब अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद जम्मू–कश्मीर विधानसभा का स्वरूप पहले जैसा नहीं रह गया, लेकिन इसके बावजूद जम्मू–कश्मीर के लोगों ने स्पष्ट जनादेश देकर एक स्थिर सरकार की बुनियाद जरूर रखी है। केंद्र शासित प्रदेश में एक दशक बाद हुए विधानसभा चुनाव में मतदाताओं का खासा उत्साह नजर आया। कहीं न कहीं जनता ने स्पष्ट संदेश भी दिया कि वे आतंकवाद व अलगाववाद से छुटकारा चाहते हैं। जाहिरा तौर पर नई सरकार के सामने व्यापक जनाकांक्षाओं को पूर्ण करने की चुनौती होगी। यह दायित्व सरकार को इस बात को ध्यान में रखकर निभाना होगा कि केंद्रशासित प्रदेश में उपराज्यपाल के पास व्यापक अधिकार हैं।

बहरहाल, ऐसे में नवनिर्वाचित सरकार और केंद्र का दायित्व है कि घाटी के लोगों ने जिस मजबूत लोकतंत्र की आकांक्षा जताई है, उसे पूरा करने में भरपूर सहयोग करें। एक समय राज्य में मतदाता डर के मारे मतदान करने हेतु नहीं निकलते थे। मतदान का प्रतिशत बेहद कम रहता था। इस बार मतदाता निर्भीकता के साथ मतदान करने निकले। जनता ने नेशनल कॉन्फ्रेंस के पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने के संकल्प को सकारात्मक प्रतिसाद दिया है। यद्यपि लोकसभा चुनाव में नेशनल कॉन्फ्रेंस को कामयाबी नहीं मिल पायी थी, लेकिन जनता ने उन्हें राज्य में सरकार चलाने का स्पष्ट जनादेश दिया है। वहीं दूसरी ओर, इस भारी मतदान व स्पष्ट बहुमत का एक निष्कर्ष यह भी है कि लोग घाटी में शांति और सुकून चाहते हैं। जम्मू–कश्मीर सरकार और केंद्र सरकार को मिलकर प्रयास करना होगा कि इस क्षेत्र में शांति कायम होने के साथ विकास की नई बयार चले। जिसमें आम नागरिक खुद को सुरक्षित अनुभव करते हुए राष्ट्रीय विकास की धारा के साथ–साथ कदमताल कर सके। बहरहाल, जम्मू–कश्मीर में नई सरकार को व्यापक जनाकांक्षाओं को पूर्ण करते हुए बदली हुई शासन व्यवस्था के साथ भी साम्य स्थापित करना है। इस बात का अहसास उमर अब्दुल्ला को भी है कि शासन चलाने में अब पहले जैसी स्वतंत्रता नहीं होगी क्योंकि राज्यपाल के पास व्यापक शक्तियां हैं। विश्वास किया जाना चाहिए कि कम से कम सीमावर्ती घाटी की संवेदनशीलता को देखते हुए इस केंद्रशासित प्रदेश में वैसा टकराव देखने को नहीं मिलेगा, जैसा कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार और एलजी के बीच देखने को मिलता रहा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि नये मुख्यमंत्री को कानून व्यवस्था से लेकर अन्य प्रशासनिक मामलों में एलजी के आगे लाचार नहीं होना पड़ेगा। विश्वास करें कि नई सरकार को प्रशासनिक मामलों में नौकरशाही का पर्याप्त सहयोग मिलता रहेगा। नीति–नियंताओं को ध्यान रखना होगा कि सरकार चलाने में किसी भी तरह का अनावश्यक व्यवधान कालांतर अशांति का वाहक बनेगा। उम्मीद करें कि यथाशीघ्र पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने के बाद जम्मू–कश्मीर में प्रशासन की विसंगतियां दूर की जा सकेंगी।

मनुष्यता के पराजय की विडम्बना

—विश्वनाथ सचदेव—

उत्तर प्रदेश के बहराइच में जो कुछ हुआ और हो रहा है वह कोई नई बात नहीं लग रही। सांप्रदायिकता की आग को हवा देकर मनुष्य को मनुष्य से दूर करने का 'खेल' हमारी राजनीति का आजमाया हुआ हथियार रहा है। आजादी से पहले और आजादी प्राप्त करने के बाद भी अक्सर हमारे यहां धर्म के नाम पर समाज को बांटने का काम राजनीतिक ताकतें करती रही हैं। यह खतरनाक 'खेल' कितना राजनीतिक लाभ देता है या दे सकता है, यह कोई छिपी हुई बात नहीं है। सच तो यह है कि सांप्रदायिकता और जातीयता के नाम पर वोटों की राजनीति सब कर रहे हैं। क्या यह सच्चाई नहीं है कि हमारे राजनीतिक दल उम्मीदवारों के चयन का आधार 'जीतने की संभावना' को बताकर जातीयता या धर्म का ही सहारा लेते हैं। कौन–सा दल ऐसा है जो अपना उम्मीदवार तय करने के लिए यह नहीं देखता कि क्षेत्र विशेष में किस जाति या धर्म के लोग अधिक प्रभावशाली हैं? यह एक पीड़ादायक सच्चाई है कि विविधता में अपनी ताकत देखने वाला हमारा देश धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्रीयता आदि के आधार पर भीतर ही भीतर लगातार बंटता जा रहा है? हमारे राजनेता कुछ भी कहें, पर राजनीतिक नफे–नुकसान का गणित अक्सर इन्हीं आधारों पर तय होता है। यह एक शर्मनाक सच्चाई है। पर कितनों को शर्म आती है इस सच्चाई पर?

सच तो यह है कि हम इस सच्चाई से रूबरू होना ही नहीं चाहते। यदि ऐसा न होता तो कभी तो हम अपने राजनेताओं से पूछते कि उनकी कथनी और करनी में इतना अंतर क्यों है? क्यों अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए वे धर्म या जाति के नाम पर बंटने के खतरों को समझना नहीं चाहते?

आज भाजपा वाले कांग्रेस पर यह आरोप लगाते नहीं थकते कि वह तुष्टिकरण की राजनीति करती रही है, अब भी कर रही है, और दूसरी ही सांस में उनकी सरकारें एक तरफ बहुसंख्यकों को रिझाने में लगी दिखती हैं और दूसरी ओर अल्पसंख्यकों पर डोरे डालती! उत्तर प्रदेश में मदरसों की राजनीति का खेल हम अरसे से देखते चले आ रहे हैं। 'मदरसों की राष्ट्र–विरोधी गतिविधियों' का हवाला देने से न थकने वाले जब महाराष्ट्र में चुनाव के मद्देनजर मौलवियों का वेतन बढ़ाते दिखते हैं, हां राजनीति का दोमुंहापन छिपाये नहीं छिपता। सवाल मौलवियों को उचित वेतन मिलने का नहीं है। सबको उनका उचित देय मिलना ही चाहिए, पर जब दूसरे द्वारा किया कोई काम 'रेवड़ी बांटना' लगे और स्वयं वही काम करना 'न्याय देना' तो इसे एक राजनीतिक विद्रूप के अलावा और क्या कहा जाएगा?

हाल ही में एक मुकदमे की सुनवाई के दौरान उच्चतम न्यायालय ने यह आशा व्यक्त की थी कि धर्म को राजनीति से दूर रखा जायेगा। पर देश ने यह आशा कब नहीं की थी? और कब उसकी यह आशा पूरी हुई? जब बड़े–बड़े राजनेता चुनावी सभाओं में कपड़ों के आधार पर लोगों को पहचानने की बात करते हैं, मंगलसूत्र छीनने का हवाला देते हैं, मंदिर–मस्जिद के नाम पर राजनीति करते हैं, तो सवाल उठाना ही चाहिए कि यह सब कहने का अधिकार और अवसर उन्हें क्यों दिया जाये? जब हमने आजादी पायी थी तो अपने लिए धर्मनिरपेक्षता का रास्ता चुना था। आज भी कुल मिलाकर देश की जनता सर्वधर्म समभाव के आदर्श में ही विश्वास करती है लेकिन, आज भी कुछ लोग हैं हमारे देश में जो बंटवारे के समय रह गए कथित काम को अब पूरा करने की दुहाई दे रहे हैं! क्या अर्थ है इसका? आखिर वे चाहते क्या हैं? और क्यों ऐसी बात कहने वालों को बेनकाब नहीं किया जाता? बहुसंख्यकों को एकजुट होने के समय का हवाला देने वालों को यह क्यों नहीं पूछा जाना चाहिए कि विश्वास, भगवान और राजनीति के बीच रेखाएं क्यों मिटायी जा रही हैं?

जीवन में विश्वास और धर्म का अपना स्थान है–इन्हें राजनीतिक नफे–नुकसान के तराजू पर नहीं तोला जाना चाहिए। पर दुर्भाग्य से ऐसा करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। और यह काम बिना किसी हिचकिचाहट के हो रहा है! कहीं कोई मुख्यमंत्री अपने राज्य में मंदिरों के विकास का आश्वासन दे रहा है तो कहीं चुनावी सभाओं में बड़े राजनेता धार्मिक नारे लगवाना जरूरी समझने लगे हैं। हद तो तब हो जाती है जब 'ईश्वर–अल्लाह तेरा नाम' कहना भी किसी राजनेता को खटकने लगता है! उनकी शिकायत यह है कि राष्ट्रपिता बापू के प्रिय भजन के यह शब्द तो मूल भजन में थे ही नहीं! इसे बीमार मानसिकता के अलावा और क्या संज्ञा दी जा सकती है?

यह देश 140 करोड़ भारतीयों का है, हम सबका है। इसकी पहचान को किसी धर्म विशेष के नाम से जोड़े जाने की कतई आवश्यकता नहीं है। हम किसी भी धर्म को मानने वाले क्यों न हों, मूलतरू हम सब भारतीय हैं। हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि हम सब धर्मों को आदर की दृष्टि से देखते हैं। ईश्वर एक है, धर्म उस तक पहुंचने का मार्ग है। मार्ग भले ही अलग–अलग हों, पर सब पहुंचाते एक ही लक्ष्य पर हैं। महात्मा गांधी जब 'सबको सन्मति दे भगवान' वाली बात कहते थे तो मनुष्य मात्र के कल्याण का सोच था इसके पीछे। सर्वे भवंतु सुखिनः वाले आदर्श में विश्वास करने वाली चेतना वाले देश में जब कोई राजनेता 'अंजाम बुरा होगा' या 'जुबान काट ली जायेगी' जैसी बातें कहता है तो यह सवाल भी मन में उठता है कि ऐसी बातों को हम सहते क्यों हैं?

नहीं, हमें यह सब नहीं सहना। ऐसी बातों पर चुप्पी का मतलब एक मौन समर्थन ही हो सकता है। गलत बातों का ऐसा समर्थन अपराध भी है और पाप भी। धर्म के नाम पर समाज में दीवारें खड़ी करने वाले, चाहे वे किसी भी धर्म को मानते हों, उस समाज के दुश्मन हैं जो दुनियाभर को बंधुत्व का मंत्र देने वाला है। यह वह मानवीय समाज है जिसके आंगन में धर्म या जातीयता की दीवारें खड़ी करना अपने आप में एक गंभीर अपराध है। विवेकशील नागरिक का कर्तव्य है कि वह ऐसे अपराध करने वालों को सही राह पर चलने की प्रेरणा दे। 'बंटेंगे तो कटेंगे' जैसी बात का सिर्फ एक ही अर्थ हो सकता है– हम सब मनुष्य बने रहें। इसका और कोई भी अर्थ मनुष्यता को कलंकित करने वाला है। अपने भीतर के मनुष्य को जागृत रखना ही हमारे अस्तित्व की सबसे महत्वपूर्ण शर्त है। उत्तर प्रदेश के बहराइच में भी यह जागृति जरूरी थी और बिहार के सीतामढ़ी में भी। ध्यान रहे, कोई 'बहराइच' या 'सीतामढ़ी' हमारे भीतर मनुष्यता की पराजय का ही प्रतीक है। यह पराजय किसी भी शर्त पर स्वीकार्य नहीं हो सकती।

—लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एग्जिट पोल की गुणवत्ता पर उठती उंगलियां

—प्रमोद भार्गव—

निर्वाचन आयोग ने 288 विधानसभा सीटों वाले महाराष्ट्र और 81 विधानसभा सीटों वाले झारखंड में चुनाव की घोषणा की है। महाराष्ट्र में 20 नवंबर को एक चरण में मतदान होगा, जबकि झारखंड में दो चरणों में 13 और 20 नवंबर को मतदान होगा। चुनाव परिणाम 23 नवंबर को घोषित किए जाएंगे। साथ ही, 15 राज्यों की 48 विधानसभा और दो लोकसभा सीटों पर उपचुनाव भी होंगे, जिनके नतीजे उसी दिन आएंगे। केरल की वायनाड लोकसभा सीट से कांग्रेस ने प्रियंका वाड्रा को उम्मीदवार घोषित किया है, यह सीट राहुल गांधी के इस्तीफे के बाद खाली हुई है। इसी क्रम में उल्लेखनीय है कि मुख्य चुनाव आयुक्त ने मीडिया से एग्जिट पोल पर जिम्मेदारी से काम करने का आह्वान किया और ईवीएम को मतदान के लिए सुरक्षित बताया है।

दरअसल, जम्मू–कश्मीर और हरियाणा के चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद से ही ईवीएम पर सवाल उठने लगे थे। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने कहा कि 'एग्जिट पोल' का कोई अर्थ नहीं है। हाल के चुनावों में जो रुझान टीवी चौनलों में दिए गए वे आधारहीन थे। जब आयोग की वेबसाइट पर साढ़े 9 बजे पहला रुझान दिया जाता है तो फिर टीवी चौनल मतगणना शुरू होने के 10–15 मिनट में कैसे रुझान शुरू कर सकते हैं? असल में, चौनल रुझान दिखाकर सिर्फ अपना एग्जिट पोल सही ठहराने का प्रयास करते हैं।

वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव के एग्जिट पोल अनुमानों के विपरीत निकले। इधर, हाल ही में जम्मू–कश्मीर और हरियाणा में हुए विधानसभा चुनाव के अनुमान भी उल्टे पड़े। जो हरियाणा में कांग्रेस की भारी बहुमत से जीत दिखा रहे थे, लेकिन भाजपा ने 49 सीटें जीत बहुमत हासिल कर लिया। विपक्ष ने एग्जिट पोल के आधार पर ईवीएम के जरिये सवाल खड़े कर दिए। ऐसे में अकसर आरोप लगते हैं कि विपक्ष वहां तो हल्ला करता है, जहां उसकी हार हो, लेकिन वहां शांत रहता है, जहां से उसे जीत मिलती है।

लोकसभा चुनाव में मतदाताओं ने सात चरणों में अपने मत दिए। हालांकि, 2019 की तुलना में मतदान कम रहा। चुनावी विश्लेषक कम मतदान को सत्तारूढ़ दल के विरोधी में मतदाता की भावना के रूप में देखते हैं, और यही आधार एग्जिट पोल के अनुमानों का भी होता है।

वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव के एग्जिट पोल अनुमानों के विपरीत निकले। इधर, हाल ही में जम्मू–कश्मीर और हरियाणा में हुए विधानसभा चुनाव के अनुमान भी उल्टे पड़े। जो हरियाणा में कांग्रेस की भारी बहुमत से जीत दिखा रहे थे, लेकिन भाजपा ने 49 सीटें जीत बहुमत हासिल कर लिया। विपक्ष ने एग्जिट पोल के आधार पर ईवीएम के जरिये सवाल खड़े कर दिए। ऐसे में अकसर आरोप लगते हैं कि विपक्ष वहां तो हल्ला करता है, जहां उसकी हार हो, लेकिन वहां शांत रहता है, जहां से उसे जीत मिलती है।

मतदान के बाद एग्जिट पोल सर्वेक्षणों ने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और मोदी–शाह की जोड़ी रणनीतिक सफलता हासिल करने जा रही है। एग्जिट पोल अनुमानों में व्यक्त किया गया कि मोदी की आक्रामक शैली ने समुदाय विशेष के मतदाताओं को पूरे देश में ध्रुवीकृत करने में अहम भूमिका निभाई। वहीं, कांग्रेस और उसके सहयोगी दल चुनाव के दौरान एक अन्य समुदाय विशेष की तुष्टिकरण की राजनीति करते रहे। मसलन, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में पिछड़े वर्ग के आरक्षण में मुसलमानों को शामिल करने का कदम। मोदी ने इस मुद्दे को उठाकर न केवल इन राज्यों में, बल्कि पूरे देश में पिछड़े और अतिपिछड़े वर्ग के मतदाताओं को उनके हकों के प्रति जागरूक किया। नतीजतन, इस वर्ग के मतदाताओं ने राजग को भरपूर वोट दिए। कहा गया कि पीएम मोदी ने इस मुद्दे का लाभ बंगाल में भी उठाया। इसी का परिणाम है कि 2019 में मिलीं 18 सीटों की तुलना में भाजपा को यहां 21 से 28 सीटें मिलने तक का अनुमान बताया था। राम मंदिर, अनुच्छेद 370 और तीन तलाक जैसे मुद्दों ने सभी वर्ग के मतदाताओं को लुभाया है।

एग्जिट पोल अनुमानों में कहा गया कि लाडली बहना, मुफ्त राशन, मुफ्त आवास, आयुष्मान योजना जैसी योजनाओं से मिले लाभ के चलते ग्रामीण मतदाता राजग के पक्ष में दिखाई दिया है। स्त्री मतदाता मोदी को चुनने में आगे दिखाई दे रही हैं। परंतु परिणाम आने के बाद मीडिया की ये मुनादियां गलत साबित हुईं। वर्ष 2019 की तुलना में वोटिंग कम रहने के बावजूद औसत मतदान 62 प्रतिशत से ऊपर रहा था। ये सर्व यदि 4 जून को आने वाले वास्तविक नतीजों पर खरे उतरते तो राजग गठबंधन स्पष्ट बहुमत में आ जाता। यही नहीं, ऐसा होता तो लोकसभा में बहुमत के लिए राजग को सहयोगियों की जरूरत नहीं पड़ती। ये अनुमान जता रहे थे कि दलित, वंचित और वनवासी मतदाताओं का जातिगत मतदान से मोहभंग हो रहा है और वे क्षेत्रीय संकीर्णता से मुक्त हो रहे हैं।

एग्जिट पोल के चुनावी विशेषज्ञ बता रहे थे कि धर्मनिरपेक्षता के पैरोकारों पर सनातन–सांस्कृतिक राष्ट्रवाद हावी रहा है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल के प्रमुखों की ओर से रामलला की प्राण–प्रतिष्ठा का आमंत्रण ठुकराने का असर भी मतदाता पर पड़ा है। लगता है, अब छद्म धर्मनिरपेक्षता का आवरण टूट रहा है। केवल बंगाल में ममता बनर्जी मुस्लिम मतदाताओं के तुष्टिकरण के लिए इसका सहारा ले रही हैं। गौरतलब है कि इस बार भाजपा ने बंगाल को केंद्रित करके हमलावर रणनीति अपनाई है। नतीजतन, कभी वामपंथी रहे लोग अब भाजपा में शामिल होकर उसकी प्रशंसा कर रहे हैं। यह भी कि ऐसे लोगों ने जहां भाजपा को मजबूती दी है, वहीं कम्युनिस्टों के इस गढ़ को बिल्कुल कमजोर करने का काम भी किया है।

एग्जिट पोल के जानकारों का कहना था– एक बार फिर यह मिथक बनता दिखाई दे रहा है कि उत्तर प्रदेश की राजनीतिक जमीन से ही प्रधानमंत्री का पद सृजित होगा। इसी मिथक को पुनर्स्थापित करने के लिए मोदी बनारस से चुनाव लड़े हैं। मोदी की यहां आमद ने पूरे पूर्वांचल को भगवा रंग में रंग दिया है। नतीजतन, भाजपा यहां सर्वेक्षणों के अनुसार अच्छी स्थिति में है। यह भी कहा कि स्पष्ट लग रहा है, जवाहरलाल नेहरू के बाद नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने वाले हैं। किंतु परिणाम के बाद देखा कि उ.प्र. और बंगाल में मतदाता ने भाजपा को बड़ा झटका दिया और एग्जिट पोल के अनुमान धराशायी हुए। ऐसे में मुख्य चुनाव आयुक्त का बयान कि एग्जिट पोल व्यर्थ की कवायद है, एक हद तक सही कहा जा सकता है।

धार्मिक उग्रवाद का बढ़ता खतरा

—भूपिंदर सिंह—

खरगोश के साथ दौडना और शिकारी कुत्तों के साथ शिकार करना एक मुहावरा है जो पाकिस्तान के धार्मिकता के साथ निरंतर संबंध को सारांशित करता है। जैसा कि इसके कायदे–आजम मुहम्मद अली जिन्ना ने विडंबनापूर्ण ढंग से प्रतिपादित किया था कि आप किसी भी धर्म या जाति या पंथ से संबंधित हो सकते हैं, इसका इस मूल सिद्धांत से कोई लेना–देना नहीं है कि हम सभी 'पवित्र भूमि' या पाकिस्तान में एक राज्य के नागरिक और समान नागरिक हैं, जो दुनिया का एकमात्र देश है जो धर्म के नाम पर बनाया गया है। चूंकि जिन्ना के शब्द धार्मिक उत्साह से भरे थे, इसलिए 11 अगस्त 1947 को संविधान सभा में दिए गए इस प्रसिद्ध भाषण की रिकॉर्डिंग सुविधाजनक रूप से 'खो गई'। करकुल टोपी (जिसे 'जिन्ना कैप' के नाम से जाना जाता है) पहने एक उदास दिखने वाले जिन्ना की औपचारिक तस्वीर करंसी नोटों के अलावा सरकारी दफ्तरों पर दिखाई देती है। धर्मनिरपेक्ष होने की चाहत के अंतर्निहित विरोधाभास बिखर गए हैं, क्योंकि पाकिस्तान एक धार्मिक टिंडरबॉक्स है जो फटने की धमकी देता है।

इस्लामी राष्ट्रवाद पर आधारित दोषपूर्ण 'दो–राष्ट्र सिद्धांत' द्वारा छोड़े गए जिन्न को नियंत्रित करने से इन्कार कर दिया गया है, और अब यह नियंत्रण से बाहर हो गया है। पाकिस्तान की कमर तोडने वाली सामाजिक–आर्थिक परेशानियां धार्मिक उग्रवाद और आतंकवाद पर उसके दोहरे रुख से जुड़ी हुई हैं, क्योंकि वह अपने पड़ोसियों को भी इसे 'निर्यात' करना जारी रखना चाहता है, जबकि घर पर चुनिंदा रूप से इससे लड़ रहा है। यह एक कठिन प्रयास है जो बुरी तरह विफल रहा है, क्योंकि धार्मिक उग्रवाद पाकिस्तानी समाज को अंदर से खा रहा है। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ ने याद दिलाया कि हमने आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में भारी कीमत चुकाई है। 80 हजार बहादुर सैनिक और नागरिक शहीद हुए हैं। ए.पी.एस. स्कूल पर हमले की कड़वी यादें अभी भी ताजा हैं। हमारी अर्थव्यवस्था को 150 बिलियन डॉलर का नुकसान हुआ है। कोई ताध्कक रूप से यह मान सकता है कि इस तरह की परीक्षा और आग से खेलने (यानी धार्मिक उग्रवाद) के परिणामों के बाद, पाकिस्तानी राज्य ने सबक सीखा होगा।

इस्लामाबाद ने एक बार फिर भारत में जन्मे इस्लामिक उपदेशक जाकिर नाइक के लिए लाल कालीन बिछाकर धार्मिकता के अपने पेटेंट लीवर को लचीला बनाने का विकल्प चुना, जो आतंकवाद के वित्तपोषण, घृणा फैलाने वाले भाषण, सांप्रदायिक विद्वेष को भड़काने आदि के आरोपों में भारत में वांछित एक भगौड़ा है। यह सुझाव देना कि जाकिर नाइक व्यक्तिगत रूप से हथियार नहीं रखता है (वह ऐसा निहित रूप से करता है),ऐसी बातें स्पष्ट रूप से सुझाव देती हैं कि यह उसकी शिक्षाओं का अंतध्निहित वर्चस्ववाद, संशोधनवाद और कहरवाद है जो असहिष्णुता, बहिष्कार और कहरता को जन्म देता है।

ऐसे विचारकों द्वारा भड़काए गए हिंसक आतंकवाद में फंसे राष्ट्र के रूप में पाकिस्तान से यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह एक और आतंकवाद को बढ़ावा देने से बेहतर जानता हो। धार्मिक तनाव, उग्रवाद और असहिष्णुता को देखते हुए जाकिर नाइक का आधिकारिक स्वागत पाकिस्तान के गहरे रुप से खंडित और घायल समाज की कैसे मदद कर सकता है, यह समझ से परे है। अपने संकीर्ण विचारों के अनुरूप, उपदेशक ने अनाथ लड़कियों का समर्थन करने वाले एक एन.जी.ओ. के कार्यक्रम के दौरान मंच से उतरकर विवाद खड़ा कर दिया। उनका चौंकाने वाला स्पष्टीकरण यह था कि लड़कियां न–महरम (अविवाहित महिलाएं जो खून की रिश्तेदार नहीं हैं) थीं। यह बात बेशर्मी से महिलाओं के प्रति घृणा का प्रदर्शन था।

पुलिस एनकाउंटर पर बहन ने उठाए सवाल

संवाददाता–बहराइच। पुलिस ने मुख्य आरोपी समेत दो को मुठभेड़ में गिरफ्तार किया है। गोली लगने से दोनों आरोपी घायल हो गए। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया जा रहा है कि दोनों आरोपी नेपाल भागने की फिराक में थे। गुरुवार को बहराइच पुलिस ने बहराइच हिंसा के आरोपियों का एनकाउंटर किया। जिसमें दो आरोपियों को गोली लगी है। गोली लगने से सरफराज और फहीम घायल हो गए हैं। उनके पैरों में गोली लगी है। घायलों को नानपारा सीएचसी में भर्ती कराया गया है। उधर, एनकाउंटर पर बहन ने सवाल उठाए हैं। उधर, मेडिकल कालेज की सुरक्षा बढ़ा दी गई। पुलिस और पीएसी तैनात है। लोगों की भीड़ को हटा दिया गया है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, मुठभेड़ नानपारा कोतवाली के बाईपास पर हुई। एडीजी अमिताभ यश ने बताया कि मुठभेड़ के बाद पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। आपको बता दें कि बहराइच में हुई हिंसा में रामगोपाल मिश्रा नाम के युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। हत्या के आरोप में अब्दुल हमीद और उसके दोनों बेटे सरफराज उर्फ रिंकू उर्फ सलमान, फहीम के अलावा राजा उर्फ साहिर, ननकऊ, मारुफ व अन्य चार अज्ञात पर केस दर्ज किया गया था। वहीं, बहराइच में जिस मकान मालिक अब्दुल हमीद पर राम गोपाल मिश्रा पर गोली चलाने का आरोप है उसकी बेटी रुखसार का कहना है कि बुधवार को चार बजे मेरे पिता अब्दुल हमीद, मेरे दो भाई सरफराज, फहीम और उनके साथ एक अन्य युवक को यूपी एसटीएफ ने उठा लिया था। मेरे पति और मेरे देवर को पहले उठाया जा चुका है किसी भी थाने से उनकी कोई खबर नहीं मिल पा रही है। हमें डर है कि उनका एनकाउंटर कर हत्या की जा सकती है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से अपने परिजनों की सुरक्षा की अपील की है। बहराइच की महसी तहसील के महराजगंज कस्बे में रविवार शाम को गाने को लेकर हुए विवाद के बाद दूसरे समुदाय के युवकों ने पथराव शुरू कर दिया। इससे दुर्गा प्रतिमा खंडित होने पर पूजा समिति के सदस्यों ने प्रदर्शन शुरू कर दिया तो दूसरे समुदाय के लोग रामगोपाल मिश्रा (24) को घर के अंदर घसीट ले गए और गोली मार दी। घटना का पूरे जिले में विरोध शुरू हो गया था। विसर्जन कमेटी के लोगों ने बहराइच–सीतापुर हाईवे पर चहलारी घाट पुल के पास जाम लगा प्रदर्शन शुरू कर दिया। बहराइच–लखनऊ हाईवे भी जाम कर दिया गया।

लेखपाल बन कर वसूली कर रहे व्यक्ति को खदेड़ा

संवाददाता–देवरिया। लेखपाल बन कर वसूली कर रहे एक व्यक्ति को शक होने पर लोगों ने दौड़ा लिया। वह जाति प्रमाण पत्र बनाने के नाम पर एक व्यक्ति से पांच हजार रुपए मांग रहा था। लोगों ने इसकी जानकारी राजस्व निरीक्षक को दी। लार थाना के पटनेही गांव के धनंजय गोंड विदेश रहते हैं। वे इस समय गांव आए हुए हैं। उन्हें अपनी बेटी का गोंड जाति का प्रमाण पत्र बनवाना है। गांव के लेखपाल राम भवन को तलाश करते वे थाना गेट के सामने आ गए। लेखपाल तो वहां नहीं मिले लेकिन कोई प्राइवेट आदमी मिला जो अपने को लेखपाल बताकर उनकी समस्या पूछा। जब धनंजय गोंड ने अपनी बेटी का अनुसूचित जन जाति का प्रमाण पत्र बनवाने की बात कही तो वह व्यक्ति पांच हजार रुपया मांगने लगा। बगल के दुकान में बैठे छात्र नेता साहू ध्रुव कुमार गुप्ता ने यह बात सुना तो उन्होंने कहा कि कचहरी से न्यूनतम तीस रुपए में जाति प्रमाण पत्र बन जाता है। आप कैसे लेखपाल हैं कि पांच हजार मांग रहे हैं। इतना सुनने के बाद कई लोगों की भीड़ जुट गई। बाद में पता चला की पैसा मांगने वाला कोई प्राइवेट आदमी था, लेखपाल नहीं था। यह जानते ही लोगों ने उसे खदेड़ दिया। इस संबंध में राजस्व निरीक्षक चंद्रप्रकाश लाल श्रीवास्तव ने कहा कि कोई लेखपाल किसी से पैसा नहीं मांग रहा था। हमने संबंधित व्यक्ति से बात कर सभी आवश्यक दस्तावेज के साथ ऑनलाइन कराने को बोल दिया है।

डीपीआरओ ने दिए एडीओ पंचायत को निर्देश

संवाददाता–गोंडा। डीपीआरओ लालजी दुबे ने जिले के समस्त ब्लॉकों के एडीओ पंचायत को निर्देश जारी किया है कि समय से अपने क्षेत्र के समस्त सफाई कर्मचारियों का पे–रोल उपस्थिति प्रमाण पत्र 22 अक्टूबर तक कार्यालय में उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। इससे शासन द्वारा अग्रिम आदेश, निर्देश प्राप्त होने पर तत्काल संबंधित कर्मचारियों को माह अक्टूबर का वेतन एवं बोनस आदि का भुगतान दीपावली पर्व से पूर्व किया जा सके। उन्होंने बताया कि इस संबंध में उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ ने दीपावली पर्व से पहले वेतन और बोनस मुहैया कराने की मांग की है।

सोने लाल पटेल को अर्पित की भावपूर्ण श्रद्धांजलि

संवाददाता–गोण्डा। अपना दल एस संस्थापक डॉ. सोने लाल पटेल के परिनिर्वाण दिवस पर कार्यकर्ताओं ने उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके कार्यों को याद किया। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सचिव राम नयन पटेल और तथा विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय अध्यक्ष राकेश वर्मा सहित कार्यकर्ताओं ने उनके चित्र पर फूल माला अर्पित की। इस मौके पर मुकेश वर्मा राम धीरज पटेल ,पेशकार पटेल, राधव राम पटेल ,मनोज शुक्ला ,आकाश तिवारी, परशुराम वर्मा ,बनारसी पटेल, परवीन प्रधान, वीरेंद्र कनौजिया ,चंद्रभान वर्मा, विजय कुमार वर्मा रहे।

बंदरों के आतंक के निजात दिलाने की मांग उठाई

संवाददाता–गोण्डा। पूरे बदल मिश्रन पुरवा में बंदरों के आतंक से परेशान है ग्रामीण। सर्वाधिक नुकसान फसलों को कर उसे नष्ट कर दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में सुधांशु मिश्रा एवं अंशुमान मिश्रा ने वन विभाग के अधिकारियों को इसकी सूचना देते हुए बंदरों को पकड़ने की मांग की।

हजरत मीना शाह के उर्स में उमड़ी जायरीनों की भीड़

संवाददाता–गोण्डा। शहर के सर्कुलर रोड स्थित मदरसा मीनाईया में जश्ने ईद मिलादुन्नबी व जश्ने दस्तारबंदी समारोह का आयोजन किया गया। शिक्षा पूरी कर चुके छात्रों को दस्तार के साथ ही सनद भी प्रदान की गई। हजरत शाह जमाल मीना की सरपरस्ती में प्रोग्राम का आयोजन हुआ। देर शाम मिलादुन्नबी की महफिल हुई जिसका संचालन हस्सान रजा बरेलवी ने किया। मुफ्ती अहमद रजा मंजरी ने शिक्षा के महत्व को बताया और हजरत इकराम मीना शाह बाबा जी के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कामों की सराहना। मुफ्ती अमानूर रब, मौलाना मुजकिर ने मीनाईया के बारे में लोगों को विस्तृत रूप से अवगत कराया। अब्दुल रहीम चिश्ती कारी सलमान रजा, हाफिज अरमान रजा आदि ने नात व मनकबत पेश किया। दस्तारबंदी (दीक्षांत समारोह) में अशहर, मोहम्मद कासिम, मोहम्मद इरशाद, मोहम्मद साहिल, आमिर खान समेत 31 छात्रों को दस्तार ने नवाजा गया। वृहस्पतिवार को दिन में कुल शरीफ की महफिल हुई। हाफिज कैफ वजीर ने पढ़ा, जामे साहबाय मीना सलामत रहे, ये मेरा पीर खाना सलामत रहे। मौलाना शकील ने पढ़ा, मुर्शीद ए मोहतरम हो निगाहें करम कारी चांद। मोहम्मद ने पढ़ा, हबीब ए खुदा की है जिस पर अता, वही तो मेरा पीर हैं। अजमत रहमानी ने पढ़ा, न जुदा करो खुदुदारा मुझे अपने आस्ता से, इनके अलावा कारी रिजवान, कारी रोशन जमा, हफीज आलम मीनाई, फिदा बलरामपुरी आजम मीनाई आदि ने अपने कलाम व मंकबत पेश किए। इस अवसर पर कारी निसार मीनाई, डॉ लायक अली, फकीर मोहम्मद मीनाई, कारी खष्कऊल्लाह, वली मोहम्मद मामा, एहसान मीनाई, तबरेज आलम मीनाई, रफीक मीनाई, बीबी लाल श्रीवास्तव, असित श्रीवास्तव, राजेन्द्र मिश्र, विभूति मणि त्रिपाठी समेत सैकड़ों अकीदतमंद मौजूद रहे।

जल जीवन मिशन योजना के तहत महिलाओं को किया प्रशिक्षित

संवाददाता–बलरामपुर। विकास खण्ड मीटिंग हाल में पंचायती राज विभाग से संचालित जल जीवन मिशन योजनान्तर्गत ग्राम प्रधान, पंचायत सहायक एवं स्वयं सहायता समूह की महिलाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न किया गया। बीडीओ रजनीश कुमार शुक्ला व एडीओ पंचायत इरफान उल्ला खां ने प्रतिभागियों को किट देकर कार्य करने के तरीकों के बारे में जानकारी दी। एडीओ पंचायत इरफान उल्ला खां ने बताया कि शासन के मंशानुरुप विकास खण्ड के सभी 81 ग्राम पंचायतों में जलापूर्ति करने, निर्मित संसाधनों के रख रखाव, संचालन, टैक ओवर, हैण्ड ओवर व संसाधनों की जरूरत उसकी गुणवत्ता आदि की जानकारी देते हुए प्रशिक्षण दिया गया।

इस अवसर पर प्रशिक्षक जिलेदार पाण्डेय, सेवा प्रदाता तकनीशियन शीला वर्मा, 81 ग्राम प्रधान, 72 पंचायत सहायक व 81 स्त्रीय स्वयं सहायता समूह की बहनें मौजूद रहीं।

रामनगरी में रोडवेज कर्मचारियों की प्रान्तीय कार्यसमिति की बैठक संपन्न

–भारतीय बस्ती संवाददाता– अयोध्या। उत्तर प्रदेश रोडवेज कर्मचारी कल्याण संघ प्रदेश अध्यक्ष डीके त्रिपाठी की अध्यक्षता में प्रान्तीय कार्यसमिति की बैठक रामलला पैलेस, निकट दन्तधावनकुण्ड, अयोध्या में सम्पन्न हुई। बैठक में अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, आगरा, वाराणसी, सहारनपुर, देवीपाटन आदि क्षेत्रों तथा प्रदेश कार्यसमिति के वरिष्ठ पदाधिकारियों डीके उपाध्याय प्रदेश महामंत्री, रुपेन्द्र सहाय उप महामंत्री, कौशल मुनि मिश्रा प्रदेश अध्यक्ष, आरटी भट्ट प्रदेश उपाध्यक्ष, उपेन्द्र कुमार प्रदेश उपाध्यक्ष, आशाराम , कंके तिवारी, अनुज कुमार, कुलदीप कुमार, एसएन अनिल कोषाध्यक्ष उपस्थित रहे। बैठक में अवैध संचालन पर अंकुश ने लग पाने के कारण, परिवहन निगम की बसों को अपेक्षित यात्री भार न मिल पाने से लोड फैक्टर में आ रही भारी गिरावट तथा इसके लिए परिचालकों के उत्पीड़न पर चिन्ता व्यक्त की गई। इसके अतिरिक्त परिवहन निगम में कर्मचारी अभाव व प्रबन्धकीय अभाव के कारण परिवहन निगघ्म बसों के संचालन में भारी अवरोध के चलते प्रतिदिन करोड़ों रूपये की हानि होने पर व्यक्त की गई।

कर्मचारी समस्याओं के समाधान में परिवहन निगम के अधिकारियों में बढ़ती अरुचि एवं निरंकुश प्रवृति को गंभीरता से लिया गया। परिवहन निगम में पारिवारिक स्थिति को लेकर चर्चा की हुई। साथ ही सभी आवश्यक विन्दुओं पर प्रदेश सरकार एवं निगम प्रशासन को नोटिस दिये जाने का सर्वसम्मत से निर्णय लिया गया। इसके अलावा बकाया महगाई भत्ता तत्काल दिलाये जाने पर जोर दिया गया। वहीं मनोज गुप्ता ने सभी पदाधिकारियों का स्वागत कर आभार ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि राज्य कर्मचारियों की तरह रोडवेज कर्मचारियों को भी पेंशन दिया जाए।

बाल्मीकि जयंती पर समाज के युवाओं को किया गया सम्मानित

–भारतीय बस्ती संवाददाता– अयोध्या। भगवान श्री राम की जन्मस्थली अयोध्या के रामकोट स्थित श्री राम आश्रम में आश्रम के पीठाधीश्वर रामलला नगर संघचालक महंत जय रामदास वेदांती के संयोजन में शरद पूर्णिमा के अवसर पर शरद पूर्णिमा और बाल्मीकि जयंती बड़े ही हर्षोल्लास के साथ के मनाया गया। शरद पूर्णिमा के अवसर पर ठाकुर जी को खीर का भोग लगाया गया और रात्रि भर चंद्रमा की चांदनी में खीर को रखकर प्रसाद वितरण किया गया इसके साथ बाल्मीकि जयंती पर सह प्रांत प्रचारक संजय जी के मार्गदर्शन में बाल्मीकि समाज से अनिल बाल्मीकि और दिलीप बाल्मीकि उर्फ राजू को सम्मानित किया गया।

रामलला नगर संघचालक महंत जयराम दास महाराज ने बताया कि श्री राम आश्रम में श्री राम लला नगर की सायं कालीन शाखा में शरद पूर्णिमा और बाल्मीकि जयंती बड़े हर्षोल्लास साथ मनाई गई प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम रखा गया जिसमें बाल्मीकि समाज से आने वाले अनिल बाल्मीकि और दिलीप बाल्मीकि उर्फ राजू को अंग वस्त्र और रामलीला देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने बताया कि महर्षिऋ वाल्मीकि महाराज ने रामायण की रचना कर समाज को प्रथम महाकाव्य दिया था जो आज भी समाज के लिए प्रेरणा स्रोत है लेकिन आजकल लोग महा ऋषियों पर भी राजनीति कर रहे हैं जो ठीक नहीं है। इस अवसर पर महानगर प्रचारक सुदीप , सह महानगर कार्यवाह सूरज, महानगर सह प्रभारी कुटुंब पवन, नगर कार्यवाह अभय, सह नगर कार्यवाह प्रमोद और नगर के सैकड़ो की संख्या में स्वयंसेवक बंधु शामिल हुए।

घर में फंदे से लटका मिला आगंनबाड़ी कार्यकत्री का शव

संवाददाता–गोंण्डा। थाना क्षेत्र के ग्राम मरचौर के गड़रियन पुरवा में गुरुवार की दोपहर आंगनबाड़ी कार्यकत्री लाजवंती पाल (36) का शव संदिग्ध हालात में घर में फंदे से लटकता मिला है। चर्चा है दो अज्ञात व्यक्ति उसे फोन करके काफी परेशान कर रहे थे, जिससे तंग आकर उसने यह कदम उठाया है। सूचना पर गांव पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों की मौजूदगी में चौनल का ताला तुड़वाकर उसका शव नीचे उतरवाया। थानाध्यक्ष दिनेश सिंह ने बताया कि पंचायतनामा भरकर शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। साथ ही लखनऊ रह रहे परिवार के सदस्यों को सूचना दी गई है। बताया जा रहा है कि वर्ष 2011 में पति से संबंध विच्छेद के बाद राजवंती पाल पुत्री रामलाल की नियुक्ति मरचौर के प्रावि. अकबरअली पुरवा के मिनी आगंनबाड़ी सेंटर पर कार्यकत्री के पद पर हुई थी। उसके पिता और भैया–भाभी ज्यादातर लखनऊ में ही रहते है। सदस्यों की गैर मौजूदगी में वह घर पर अकेली ही रहती थी। घर से वह प्रतिदिन थोड़ी दूर स्थित सेंटर जाकर कामकाज निपटाती थी। गुरुवार दोपहर को देर तक जब उसका चौनल नहीं खुला तो आसपास के ग्रामीणों ने आवाज लगाई। अंदर से कोई जवाब न आने पर लोग सशंकित हुए। इसके बाद चौनल का पर्दा हटाकर देखा उसका शव पंखे लटक रहा था। जिसकी सूचना लोगों ने पुलिस को दी। लोग दबी जुबान से उसे परेशान किए जाने की चर्चा कर रहे हैं। हालांकि, इसकी सही जानकारी परिजनों के लखनऊ से आने पर ही हो सकेगी। पुलिस ने उसके कमरे से मोबाइल फोन बरामद किया है। एसओ ने बताया कि घटना के हर पहलू की छानबीन की जा रही है।

भाजपा के हार के डर से टला मिल्कीपुर उपचुनाव –स्वामी प्रसाद मौर्य

संवाददाता–देवरिया। पूर्व मंत्री व राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी प्रसाद मौर्य ने कहा है कि भाजपा की हार के डर से मिल्कीपुर का उपचुनाव टाल दिया गया। भाजपा को अभी भी अयोध्या की हार का डर सता रहा है। उक्त बातें उन्होंने गुरुवार को देवरिया में पत्रकारों से बातचीत के दौरान कही।

स्वामी प्रसाद मौर्य ने आरोप लगाया कि निर्वाचन आयोग सरकार की सुख सुविधा को ध्यान में रखते हुए अधिसूचना जारी कर रहा है। उत्तर प्रदेश में होने वाले 10 विधानसभा सीट के उपचुनाव में मिल्कीपुर विधानसभा छोड़कर शेष 9 विधानसभा क्षेत्र की अधिसूचना जारी की गई। यह साबित करता है कि कहीं ना कहीं अभी भी अयोध्या लोकसभा चुनाव की हार का डर भाजपा को सता रहा है। पूर्व मंत्री ने सवाल उठाया कि वन नेशन वन इलेक्शन कैसे संभव होगा जब निर्वाचन आयोग चार प्रदेशों का चुनाव एक साथ नहीं करा पा रहा है। दो प्रदेशों का चुनाव पहले कराया गया दो का बाद में हो रहा है। अब उत्तर प्रदेश की 10 विधानसभा सीटों का उपचुनाव एक साथ आयोग नहीं करा पा रहा है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार को यह तय करना है कि वन नेशन और वन इलेक्शन का दिया हुआ उनका नारा आज ही से गलत साबित हो रहा है तो यह आगे कैसे चलेगा।

स्वामी प्रसाद मौर्य ने बहराइच की घटना के लिए भाजपा को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि सरकार किसी एक वर्ग की नहीं सबकी होती है। इसलिए सबके सम्मान स्वाभिमान को देखते हुए सभीकी सुरक्षा की गारंटी होनी चाहिए। आरोप लगाया कि इस दंगे के लिए सरकार, आरएसएस और उनके अन्य सहयोगी संगठन जिम्मेदार हैं। वे जानबूझ कर जगह–जगह हर जनपदों में बारी–बारी से हिंदू–मुस्लिम हिंसा फैलाने की कोशिश कर रहे हैं।

गन्ना समिति के तीनों अध्यक्ष पद पर भाजपा का परचम

संवाददाता–बलरामपुर। गन्ना समिति के अध्यक्ष पद पर हुए चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने शानदार जीत दर्ज की है। जिलाध्यक्ष प्रदीप सिंह की अगुवाई में तीनों तहसीलों पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने निर्विरोध चुनाव जीता है। गुरुवार को तुलसीपार्क स्थित अटल भवन कार्यालय पर जीत का जश्न मनाते हुए कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे का मुंह मीठा कराकर खुशी जाहिर की। अवध क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष कमलेश मिश्रा, अवध क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रभारी व प्रदेश महामंत्री संजय राय, अवध क्षेत्र गन्ना समिति चुनाव के क्षेत्रीय संयोजक विजय प्रताप सिंह एवं क्षेत्रीय उपाध्यक्ष व जिला प्रभारी राहुल राज रस्तोगी के नेतृत्व में गन्ना समिति के अध्यक्ष पद पर भाजपा कार्यकर्ताओं को चुनाव लड़ाया गया था। जिसमें गन्ना समिति तुलसीपुर में अध्यक्ष पद पर नीलम सिंह एवं उपाध्यक्ष पद पर राजेंद्र शुक्ला, उतरौला में अध्यक्ष पद तोताराम वर्मा, उपाध्यक्ष पद पर संजय यादव, बलरामपुर में अध्यक्ष पद पर रजनी सिंह एवं उपाध्यक्ष पद पर रामानंद पाण्डेय को निर्विरोध चुना गया है। जिलाध्यक्ष ने कहा कि गन्ना समिति अध्यक्ष पद पर हुए चुनाव में सभी प्रत्याशियों की जीत शानदार रही है। जिलाध्यक्ष प्रदीप सिंह ने बताया कि भाजपा पर सभी वर्गों का विश्वास है। गन्ना समिति के हुए चुनाव में गन्ना किसानों ने भाजपा पर विश्वास जताया है। पीएम मोदी व सीएम योगी जनता के हितों के लिए विभिन्न प्रकार की जनकल्याणकारी योजनाएं चल रहे हैं। जिससे देश विकास की ओर नित प्रतिदिन आगे बढ़ता जा रहा है। सदर विधायक पल्टूराम, तुलसीपुर विधायक कैलाश नाथ शुक्ला, उतरौला विधायक राम प्रताप वर्मा, पूर्व विधायक गैसड़ी शैलेश कुमार सिंह शैलू, जिला पंचायत अध्यक्षा आरती तिवारी, नगर पालिका अध्यक्ष धीरेंद्र प्रताप सिंह धीरू ने भाजपा को मिली जीत पर खुशी जाहिर करते हुए पदाधिकारियों को बधाई दी है। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष बृजेंद्र तिवारी, आद्या सिंह, वरुण सिंह मोनू, विष्णु देव गुप्ता, बिंदु विश्वकर्मा, रवि मिश्रा, अवधेश तिवारी तरुण, पूर्व जिला महामंत्री डॉ अजय सिंह पिंकू, जिला मीडिया संयोजक अवधेश पाण्डेय, अंशुमान शुक्ला, मनीष तिवारी, नगर अध्यक्ष कृष्ण गोपाल गुप्ता, नगर महामंत्री नंदलाल तिवारी व कंके तिवारी सहित तमाम भाजपाइयों ने एक दूसरे का मुंह मीठा कराकर खुशी जाहिर की।

मुर्गी फार्म में घुसे तेंदुए ने 30 मुर्गियों को बनाया निवाला

संवाददाता–बलरामपुर। जाली फाड़कर मुर्गी फार्म में घुसे तेंदुए ने 30 मुर्गियों को अपना निवाला बना लिया। 50 मुर्गियां दहशत में मर गई। जाते–जाते तेंदुआ मुर्गी फार्म से एक कुत्ते को भी उठा ले गया। चार दिनों के बीच तेंदुए ने चार बकरों को निवाला बनाया है। घटना तुलसीपुर के ग्राम नवानगर हथियागढ़ में बुधवार देर रात हुई है। घटना को लेकर ग्रामीणों में दहशत है। लोगों ने पिंजड़ा लगाकर तेंदुआ पकड़ने की मांग की है। नवानगर हथियागढ़ निवासी जीलानी ने गांव के बाहर मुर्गी फार्म खोल रखा है। उन्होंने बताया कि मंगलवार रात तेंदुए ने मुर्गी फार्म की जाली काट दी। उसके अंदर आने पर मुर्गियां चहचहाने लगीं तो उनकी नींद खुल गई। शोर मचाने पर तेंदुआ भाग निकला। जाते–जाते वह फार्म पर रहने वाले कुत्ते को उठा ले गया। बुधवार रात मुर्गी फार्म की सतर्कता बढ़ा दी गई थी। तेंदुआ 11 बजे रात को पहुंचा और मुर्गी फार्म में घुस गया। 30 मुर्गियों को फार्म के अंदर ही बैठकर खा लिया। तेंदुआ देख फार्म की सुरक्षा में लगे लोग भाग निकले। 50 मुर्गियां दहशत में मर गईं। 20 मुर्गियों को वह गन्ना खेत में ले गया और आराम से बैठकर खाया। नवानगर निवासी नानबाबू धुनिया ने बताया कि सोमवार रात सभी लोग सो गए थे। सुबह उठकर देखा तो आंगन में बकरी नहीं थी। वहां तेंदुए के पंजे के निशान पाए गए।

बहराइच हिंसाः रामगोपाल को न तलवार मारी गई, न उखाड़े गए नाखून, पुलिस ने किया अफवाहों का खंडन

संवाददाता–बहराइच। हिंसा में मारे गए रामगोपाल मिश्रा की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट को लेकर सोशल मीडिया पर कई तरह की अफवाहें चल रही हैं। यूपी पुलिस ने इन अफवाहों का खंडन किया। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि रामगोपाल की मौत गोली लगने से हुई है। गोली लगने से पहले या बाद में उसके करंट के झटके नहीं दिए गए। न ही उसे तलवार से काटा गया। पुलिस ने स्पष्ट किया कि उसके पैरों के नाखून भी नहीं नोचे या उखाड़े गए। एक अपील जारी करते हुए पुलिस के द्वारा कहा गया है कि सोशल मीडिया में साम्प्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ने के उद्देश्य से ग्रामक सूचना जैसे मृतक को करंट लगाना, तलवार से मारना एवं नाखून उखाड़ना आदि बातें फैलाई जा रही हैं जिसमें कोई सच्चाई नहीं है। पोस्टमॉर्टम में मृत्यु का कारण गोली लगने से होना पाया गया है। इस घटना में एक व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य किसी की मृत्यु नहीं हुई है। अतः सभी से अनुरोध है कि साम्प्रदायिक सौहार्द को बनाये रखने के लिए अफवाहों पर ध्यान न दें व भ्रामक सूचनाओं को प्रसारित न करें।

विभागीय सूत्र ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मृतक रामगोपाल मिश्रा के शरीर में 30 से 35 छर्रे धंसने की पुष्टि हुई हैं। वहीं छर्रे मृतक के चेहरे, गले और सीने में धंसे मिले हैं। जो साफ जाहिर कर रहे है कि उसे तीन से अधिक भरुआ कारतूस मारी गई है। मृतक के कंधों के नीचे भी मौत की पुष्टि के लिए गोली मारी गई है। सूत्र ने बताया कि गोली मारने से पहले मृतक की जमकर निर्मम पिटाई भी की गई है। जिससे मृतक के शरीर में कई चोट के निशान हैं और बाईं आंख के ऊपर धारदार और ठोस हथियार से वार के निशान है। वहीं, मौत का कारण हैमरेज मतलब अधिक रक्तस्राव निकला है। प्रतिमा विसर्जन जुलूस के दौरान रविवार और सोमवार को हुई हिंसा के बाद अब धीरे–धीरे जिले के हालात सामान्य होने लगे हैं। सुरक्षा के मद्देनजर पुलिस फोर्स अब भी तैनात है और एडीजी गोरखपुर जोन केएस प्रताप व कमिश्नर शशि भूषण लाल समेत आला अधिकारी कैंप कर रहे हैं। घटना के बाद अब तक 12 मुकदमा दर्ज किए गए हैं और 55 से अधिक लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। बुधवार को चौथे दिन हिंसा प्रभावित रमपुरवा, भगवानपुर, हरदी, शिवपुर, खैरा बाजार में दुकानें खुली रहीं और स्थिति सामान्य रही। लोग बेखौफ बाजारों में निकले और रोजमर्रा के जरूरी सामान खरीदते दिखे। रविवार से लेकर सोमवार तक पूरे घटनाक्रम में पुलिस की भारी लापरवाही सामने आई थी। एसपी ने हरदी थाना प्रभारी सुरेश वर्मा व महसी चौकी प्रभारी को तत्काल निलंबित कर दिया था। इस दौरान विसर्जन में शामिल लोगों ने सीओ रुपेंद्र गौड़ पर भी लापरवाही समेत गंभीर आरोप लगाए थे। इसका संज्ञान लेकर शासन की ओर से सीओ को निलंबित कर दिया गया। रामपुर से आए विके खोखर को महसी की जिम्मेदारी दी गई है।

विवाद का केंद्र रहे महराजगंज कस्बे में स्थिति अभी सामान्य नहीं हुई है। कस्बे की दुकानें बुधवार को भी बंद रहीं। पूरी बाजार में सिर्फ एक मेडिकल स्टोर खुला रहा और चंद लोग ही नजर आए। हर तरफ सिर्फ पुलिस, पुलिस के वाहन व पीएसी के जवान ही नजर आए। वहीं मुख्य आरोपी अब्दुल हमीद के घर के बाहर परियोजना निदेशक अरुण सिंह व बलरामपुर के एएसपी समेत सैकड़ों की संख्या में पुलिसकर्मी तैनात रहे। कस्बे में अब भी 12 कंपनी पीएसी, दो सीआरपीएफ, आरएएफ व चार वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों की तैनाती की गई है। सीएम कार्यालय की भी नजर है। हिंसा के मामले में पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है। बुधवार तक जिले में दोनों समुदायों पर कुल 12 मुकदमें दर्ज हुए। वहीं, 50 से अधिक लोगों को पुलिस ने अब तक जेल भेजा। हरदी थाने में 10 मुकदमे दर्ज हुए हैं। हरदी थाना प्रभारी कमल शंकर चतुर्वेदी ने बताया कि पहला मुकदमा अब्दुल हमीद समेत छह नामजद व 10 अज्ञात पर लिखा गया था। इसके बाद हुए उपद्रव को लेकर अज्ञात भीड़ पर मुकदमे दर्ज किए गए हैं। एडीजी गोरखपुर जोन केएस प्रताप, कमिश्नर शशिभूषण लाल, डीआईजी अमरेंद्र प्रसाद, डीएम मोनिका रानी की मौजूदगी में बुधवार को महसी तहसील सभागार में उच्चस्तरीय बैठक हुई। इसमें स्थिति जल्द सामान्य करने पर चर्चा हुई। बैठक के बाद डीएम ने बताया कि 50 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया है। वहीं अन्य का चिह्नांकन जारी है। आगजनी के दौरान हुए क्षति के आकलन में राजस्व टीम लगी हुई है। पीड़ितों को लंच पैकेट, खाद्य सामग्री मुहैया कराई जा रही है।

सड़क पर अतिक्रमण न करें व्यापारी

संवाददाता–गोण्डा। अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के बैठक रामेश्वर नाथ मंदिर प्रांगण में अवध प्रांत के क्षेत्रीय अध्यक्ष हरिश्चंद्र सिंह उर्फ हरी सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इसमें बैठक में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। महामंत्री राम कुमार कसौधन ने कहा कि दीपावली में दुकानदार सही मिठाई बेचे, मिलावटी सामान की बिक्री न करें। साथ ही सड़क पर अतिक्रमण न करें। हरी सिंह ने कहा कि व्यापारी का कार्य है सही ढंग से व्यापार करना। इससे जनता के बीच व्यापारी की निष्ठा बढ़ती है और उसका व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढ़ता है। उन्होंने कहा कि कहा गलत तरीके से व्यापार करने वालों के साथ संगठन खड़ा नहीं होगा। व्यापारी अपनी दुकान पर अपना नाम–पता डिस्प्ले करें। साथ ही सड़क पर अतिक्रमण न करें। कस्बा निवासी व्यापारी अजय ने कहा कि परिवार रजिस्टर के लिए ब्लॉक के ग्राम पंचायत अधिकारी से मिलने के लिए दो दिन से जा रहे है लेकिन कोई नहीं मिल रहा है। क्षेत्रीय अध्यक्ष ने समस्या का समाधान कराने का आश्वासन दिया।

पवन कुमार कौशल ने दीपावली तक टैक्सी या अन्य वाहन बाहर खड़े कराने की मांग की। चौकी प्रभारी अजय कुमार तिवारी ने कहा कि व्यापारी स्वच्छता पर विशेष ध्यान दे जिससे कस्बा की सुंदरता बढ़ जाएगी। बैठक में लक्ष्मण प्रसाद की असामयिक मृत्यु पर दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई । बैठक में व्यापार मंडल अध्यक्ष बेलसर निखिल सिंह, महामंत्री राम कुमार कसौधन, राज बहादुर मिश्र, दिनेश कुमार, राधेश्याम मोदनवाल, पवन कुमार कौशल, राजेश गुप्ता, महेश ,अजय गुप्ता, दीपक गुप्ता सहित अन्य व्यापारी उपस्थित रहे।

मारपीट में दो युवकों का सिर फूटा, हालत गम्भीर

संवाददाता–संतकबीरनगर। खलीलाबाद कोतवाली क्षेत्र मगहर कस्बे के गांधी आश्रम चौराहे के निकट गुरुवार को दोपहर बाद घर जाते समय रास्ते में दो युवकों पर मनबढ़ों ने हमला कर दिया। इस दौरान बुरी तरह मारपीट कर उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया। जिससे उनका सिर फट गया और खून से लहुलुहान हो गए। मौके से गुजर रहे लोगों ने घटना में बीच बचाव कर दोनों युवाओं की जान बचाई। घटना के बाद हमलावर भाग गये। पीड़ित ने घटना को लेकर कोतवाली खलीलाबाद को लिखित तहरीर दी है। इस्लाम नगर मोहल्ला निवासी घायल इरशाद अली पुत्र सज्जाद अली ने बताया कि गुरुवार को दोपहर बाद अपने साथियों के साथ संत कबीर इंटर कालेज के रास्ते घर जा रहा था। इसी दौरान कस्बे के ही रहने वाले मनबढ़ युवकों ने उन पर हमला कर दिया। जिसमें उसके व साथी अरबाज के सिर में गम्भीर चोट लग गई। सिर बुरी तरह से फट गया। घटना के दौरान मौके से गुजर रहे राहगीरों ने उनकी जान बचाई। दोनों खून से लतपथ हो गए। मारपीट की घटना में कार्रवाई को लेकर पुलिस चौकी पहुंचे। वहां से दोनों घायल युवकों को इलाज के लिए चिकित्सकों के यहां ले गए। दोनों की हालत खराब देख चिकित्सकों ने जिला अस्पताल जाने की सलाह दी। मामले में पीड़ितों ने हमलावरों के विरुद्ध कार्रवाई के लिए तहरीर दी है।

अध्यापकों के तबादले के विरोध में दृष्टिबाधित बच्चों ने डीएम कार्यालय पर किया प्रदर्शन

संवाददाता–गोरखपुर। राजकीय स्पर्श इंटर कॉलेज के तीन अध्यापकों के तबादले से बिफरे छात्रों ने डीएम कार्यालय पर प्रदर्शन किया। अपनी मांगों को लेकर पहुंचे छात्रों का कहना है कि तीन अच्छे अध्यापकों का तबादला हो जाने की वजह से विद्यालय में पठन पठान प्रभावित होगा। गुरुवार की सुबह डीएम कार्यालय पर पहुंचे विद्यार्थियों ने जमकर नारेबाजी की और प्रशासनिक अधिकारियों से अपनी मांग अविलंब पूरी करने को कहा। इस दौरान अधिकारी आश्वासन देते रहे। लेकिन बच्चे उचित कार्रवाई के बाद ही डीएम कार्यालय से हटाने की जिद पर अड़े रहे। विद्यार्थियों का कहना है कि उनके विद्यालय में व्यवस्था काफी खराब है। इससे असुविधा होती है। उन समस्याओं को भी दूर किया जाए।

डीएम ऑफिस के सामने धरने पर बैठकर छात्र नारेबाजी कर रहे हैं। राजकीय स्पर्श इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य लक्ष्मी शंकर जायसवाल सहित अन्य अध्यापक और अधिकारीगण उनको समझाने बुझाने में लगे हुए थे।

आठ बोटा सागौन के साथ दो गिरफ्तार,ट्रैक्टर–ट्रॉली सीज

संवाददाता–गोरखपुर। गुलरिहा थाना क्षेत्र के जंगल डुमरी नंबर दो में बुधवार की रात ट्रॉली पर लादकर सागौन की लकड़ी चोरी से ले जाते समय दो आरोपितों को पुलिस ने दबोच लिया। गुलरिहा पुलिस ने दोनों के खिलाफ वन संरक्षण अधिनियम की धाराओं में केस दर्ज कर चोरी में शामिल ट्रैक्टर–ट्रॉली को सीज कर दिया।

गुलरिहा थाने के जंगल डुमरी नंबर 2 चौकी प्रभारी अंजनी तिवारी ने तहरीर में लिखा है कि क्षेत्र में गश्त के दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि जंगल हरपुर से जंगल सखनी की तरफ एक ट्रैक्टर–ट्रॉली पर जंगल से सागौन की लकड़ी जा रही है। गुरुवार की रात साढ़े आठ बजे पुलिस ने घेराबंदी की तो जंगल सखनी मोड़ पर एक ट्रैक्टर चालक पुलिस को देखते ही गाड़ी रोकर भागने लगा। पुलिस ने दौड़ कर उसे पकड़ लिया। पकड़े गए दोनों आरोपितों की पहचान क्षेत्र के भटहट निवासी शमशेर अली पुत्र बहरइची व नबी हुसैन पुत्र गुलाब हुसैन के रूप में हुई। दोनों को पुलिस ने हिरासत में लेकर ट्रैक्टर–ट्रॉली को सीज कर 8 बोटा सागौन लकड़ी बरामद कर आरोपितों को हिदायत देकर छोड़ दिया।

दीपावली और सहालग का समय करीब आने के साथ फर्नीचर कारोबार में आई तेजी

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले में दीपावली और सहालग का समय करीब आने के साथ ही फर्नीचर के कारोबार में भी तेजी आ गई है। इस बार बाजार में रौनक अधिक है। लोग पहले से ही बड़े शोरूम में पहुंचकर अपने जरूरत के फर्नीचर को देखकर पसंद कर रहे हैं। कैटलॉक से भी बुकिंग कराई जा रही है। दुकानदारों ने पूरी तैयारी की है तो लोग बुकिंग भी खूब करा रहे हैं। शहर के बड़े शोरूम से लेकर छोटे कारोबारी तक हर किसी ने पूरी तैयारी की है। फर्नीचर कारोबार सबसे अधिक सहालग के सीजन में चलता है। इसके अलावा त्योहारों पर भी लोग खरीदारी करते हैं। जिला मुख्यालय पर फर्नीचर के करीब 12 बड़े शोरूम हैं। इसके अलावा मुख्यालय और ग्रामीण क्षेत्र को मिलाकर करीब दो सौ से अधिक छोटी, बड़ी फर्नीचर की दुकानें हैं। सभी जगह पर खूब स्टॉक है। इसके अलावा कैटलॉक रखा हुआ है, जिसे देखकर लोग पसंद कर रहे हैं और ऑर्डर दे रहे हैं। ऑर्डर के अनुसार कारोबारी फर्नीचर तैयार कराने में जुटे हुए हैं। आलमारी के साथ ही डायनिंग टेबल, बेड, सोफा आदि की बुकिंग अधिक हो रही है। कारोबारियों की माने तो दीपावली और सहालग के समय में जिले में 10 करोड़ का कारोबार होने का अनुमान है। बाजार में रौनक को देखते हुए कारोबारियों ने पूरी तैयारी की है। जनपद में स्थानीय स्तर पर बने फर्नीचर के साथ ही ब्रांडेड फर्नीचर के भी शोरूम हैं। इसमें गोदरेज सहित कई प्रमुख कंपनियां शामिल हैं। कंपनियों के द्वारा फर्नीचर की गारंटी के साथ ही तरह–तरह के ऑफर भी दिए जा रहे हैं। दीपावली को लेकर ऑफरों की भरमार है। तमाम लोग अपनी पंसद का फर्नीचर बनवाने के लिए पहले से ही ऑर्डर कर दिए हैं। फर्नीचर कारोबारी प्रवीन कुमार चौधरी ने बताया कि दीपावली और सहालग की हम सभी ने खूब तैयारी की है। पहले से ही फर्नीचर को तैयार कराना शुरू कर दिया है। इसके अलावा लोग पहले से ही बुकिंग भी करा रहे हैं।

शहर में निकली अग्रसेन महाराज की भव्य शोभायात्रा

संवाददाता–अयोध्या। अयोध्या नगर में गुरुवार को अग्रसेन महाराज की शोभायात्रा निकाली गई। श्री अग्रवाल महासभा रजिस्टर्ड के द्वारा आयोजित शोभायात्रा को नगर विधायक वेद प्रकाश गुप्ता ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर विधायक श्री गुप्ता ने कहा कि आज के दिन हम महाराजा अग्रसेन के विचारों को याद कर उनके बताएं गए रास्ते पर चल कर ही समाज का उत्थान कर सकते हैं। उन्होंने कहा की अग्रवाल समाज हमारे समाज का वह स्तंभ है जो व्यापार ही नहीं सामाजिक सरोकार और परोपकार से भी सदैव जुड़ा रहता है। मैं इसकी भूरी भूरी प्रशंसा और साधुवाद देता हूं। इस अवसर पर सभा के उत्तम बंसल ने वेद प्रकाश गुप्ता का माल्यार्पण कर स्वागत किया। महाराजा अग्रसेन का विशाल सजा रथ, डीजे भांगड़ा ढोल के साथ निकली शोभायात्रा में अग्रवाल समाज की माताएं बहने बच्चे बुजुर्गों समी ने प्रतिभाग किया। विभिन्न स्थानों पर शोभायात्रा का भव्य स्वागत कर प्रसाद वितरण किया गया।

एनएसएस के लिए शुरू हुआ पंजीकरण, छात्र–छात्राओं में दिखा उत्साह

संवाददाता–गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के लिए गुरुवार को पंजीकरण शुरू हो गया। पहले ही दिन इसे लेकर छात्र–छात्राओं में उत्साह रहा। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पहले दिन 253 विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया है।

डीडीयू में एनएसएस के समन्वयक डॉ. सत्यपाल सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय कैंपस में रासेयो के कुल 13 यूनिट हैं। प्रति यूनिट में सौ छात्र–छात्राएं होते हैं। यह दो वर्ष का प्रशिक्षण होता है। इसलिए पिछले वर्ष के 650 विद्यार्थी पहले से ही हैं। शेष 650 सीटों के लिए पंजीकरण शुरू हुआ है। जिस दिन 650 बच्चे हो जाएंगे, उसी दिन पंजीकरण बंद हो जाएगा।

डीडीयू में गुरुवार को गूगल फॉर्म के माध्यम से एनएसएस में पंजीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। डॉ.सत्यपाल सिंह ने बताया कि रासेयो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का कार्य करता है। यह ऐसा माध्यम है, जहां से विद्यार्थियों को अपने अंदर की प्रतिभा को निखारने का निरंतर अवसर प्राप्त होता रहता है। रासेयो के माध्यम से विद्यार्थियों को स्थानीय स्तर पर लगने वाले सामान्य व विशेष शिविरों के साथ ही साथ राष्ट्रीय स्तर पर लगने वाले राष्ट्रीय एकीकरण शिविर (एनआईसी), साहसिक कार्यक्रम, गणतंत्र दिवस परेड शिविर, राष्ट्रीय युवा सप्ताह शिविर, स्वतंत्रता दिवस शिविर आदि में प्रतिभाग करने का अवसर मिलता है।

राजस्व परिषद के चेयरमैन को दिया ज्ञापन

संवाददाता–गोरखपुर। जिला अधिकता एसोसिएशन का एक प्रतिनिधिमंडल एसोसिएशन के अध्यक्ष कृष्ण दामोदर पाठक के नेतृत्व में चेयरमैन राजस्व परिषद उत्तर प्रदेश से सर्किट हाउस में मिला और अपनी समस्याओं से संबंधित एक ज्ञापन उन्हें सौंपा। यह जानकारी एसोसिएशन के मंत्री लालमन ने दी।

ग्राम प्रधान व सचिव ने एक–दूसरे के विरुद्ध खोला मोर्चा, दी तहरीर

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। उस्का बाजार ब्लॉक क्षेत्र के महुलानी गांव के प्रधान के खिलाफ ब्लॉक के सचिवों ने सामूहिक रूप से थाने पर तहरीर देकर केस दर्ज करने की मांग की है। कर्मियों ने प्रधान पर सरकारी कार्यों में बाधा डालने, फर्जी मुकदमें में फंसाने, धरना प्रदर्शन के दौरान अपशब्दों का प्रयोग करने व पांच हजार रुपया छीनने का आरोप लगाया है। थाना प्रभारी रवीन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि दोनों पक्षों से तहरीर मिली है।

नवंबर में होगा नैट

संवाददाता–गोरखपुर। परिषदीय विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों का लर्निंग आउटकम के आकलन के लिए निपुण एसेसमेंट टेस्ट (नैट) का आयोजन 18 से 23 नवंबर तक किया जा रहा है। इसमें कक्षा एक से लेकर आठ तक के बच्चे परख ऐप के माध्यम से ओएमआर आधारित टेस्ट देंगे।

जिले में यह परीक्षा नवंबर माह में दो दिनों में आयोजित की जाएगी। पहले दिन कक्षा एक से तीन तक के छात्र और दूसरे दिन कक्षा चार से आठ तक के छात्र परीक्षा को देंगे। इसके माध्यम से छात्रों के अधिगम स्तर का पता लगाया जाएगा।

इसके परिणाम के आधार पर बच्चों के शैक्षणिक स्तर में होने वाले गैप का पता लगाते हुए आवश्यक सुधार किए जाएंगे। राज्य परियोजना कार्यालय से ओएमआर शीट का मुद्रण एवं वितरण किया जाएगा। इससे लिए शिक्षकों को भी ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया जाएगा।

सड़क हादसे में तीन लोग गंभीर

संवाददाता–बस्ती। रुधौली थानाक्षेत्र के रुधौली बखिरा मार्ग पर मैजिक और बाइक के टक्कर में तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से घायलों को सीएचसी पर ले गए। जहां डॉक्टर ने घायलों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। महुआर कुढही निवासी विशाल और प्रिंस बाइक से रुधौली आ रहे थे। जबकि कुढ़ाही निवासी दिनेश अपनी मैजिक लेकर घर जा रहे थे। अचानक नगर पंचायत रुधौली के मध्यनगर के पास बाइक और मैजिक की आमने–सामने से भिडंत हो गई। जिससे तीनों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने घायलों को लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रुधौली लेकर आए। डॉक्टर ने प्राथमिक इलाज के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया है।

सात साल के कम की सजा में रिमांड की मांग निरस्त

संवाददाता–गोरखपुर। सात साल के कम अवधि के सजा वाले मामले में प्रभारी मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अरुण कुमार यादव ने रामगढ़ताल थाना क्षेत्र के बड़गो निवासी पवन कुमार गौड़ की रिमांड याचना को निरस्त करते हुए उसे 20 हजार रुपए के व्यक्तिगत बंध पत्र पर रिहा कर दिया। आरोपित पवन कुमार गौड़ को विवेचक पंकज कुमार ने मुकदमा अपराध संख्या 552/2024 अंतर्गत धारा 46,351(3),352 भारतीय न्याय संहिता थाना रामगढ़ताल, जिला गोरखपुर में गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया और उसके रिमांड की याचना की। आरोपित की ओर से डिप्टी चीफ लीगल एंड डिफेंस काउंसिल प्रकाश चंद्र शुक्ल एवं असिस्टेंट लीगल एंड डिफेंस काउंसिल हबीब जफर ने रिमांड याचना का विरोध करते हुए कहा कि विवेचक द्वारा जिन धाराओं में रिमांड की याचना की गई है वह सात वर्ष से कम अवधि से दंडनीय है। विवेचिका द्वारा धारा 35 बीएनएसएस की नोटिस भी नहीं दी गई है और सत्येंद्र कुमार अंतिल बनाम सीबीआई के मामले में दिए गए दिशा निर्देश के उल्लंघन में यह रिमांड प्रस्तुत किया गया है।

बच्ची का अपहरण और दुष्कर्म के आरोपित को दस साल की सजा

संवाददाता–गोरखपुर। नाबालिग बच्ची को बहला–फुसलाकर भगा ले जाने और उसके साथ दुष्कर्म करने के जुर्म में विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट राहुल आनंद ने बड़हलगंज थाना क्षेत्र के ग्राम नेतवार पट्टी निवासी अभियुक्त उदयभान उर्फ सूरज यादव को दस साल के कठोर कारावास एवं 70 हजार रुपए अर्थदंड से दण्डित किया है। अर्थदंड न देने पर अभियुक्त को एक साल का कारावास अलग से भुगतना होगा। अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक राघवेंद्र त्रिपाठी का कहना था कि घटना 27 जुलाई 2016 की है। वादी की 16 वर्षीय नाबालिग बच्ची घर से स्कूल के लिए निकली थी। अभियुक्त वादी की लड़की से रास्ते में मिला और उसे बहला–फुसलाकर भगा ले गया और उसके साथ दुष्कर्म किया।

अयोध्या में तैयार हो रहा अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस रामायण विश्वविद्यालय, राम पर शोध कर सकेंगे छात्र

संवाददाता–अयोध्या। अयोध्या में बन रहे रामायण विश्वविद्यालय में राम पर शोध होगा। महर्षि महेश योगी रामायण विश्वविद्यालय का अस्सी फीसदी काम पूरा हो गया है। छात्र बारहवीं के बाद प्रवेश ले सकेंगे। पीजी के बाद रामायण पर शोध कर सकेंगे। रामनगरी अयोध्या सनातन परपंरा की एक नई इबारत लिखने जा रहा है। नेशनल हाईवे 32 पर रामायण विश्वविद्यालय बनकर लगभग तैयार हो गया है। 500 करोड़ की लागत से बन रहे इस विश्वविद्यालय को महर्षि रामायण विद्यापीठ ट्रस्ट बना रहा है। नवंबर 2023 में महर्षि महेश योगी रामायण विश्वविद्यालय का 80: काम पूरा हो गया है। 21 एकड़ में विकसित किया जा रहा यह विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शैक्षणिक सुविधाएं छात्रों को मिलेंगी। अगले वर्ष अप्रैल तक यह पूरी तरह से बनकर तैयार हो जाएगा। अपने आप में इस अनोखे विश्वविद्यालय में विशेष रूप से छात्र रामायण पर रिसर्च कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय में कुल 12 चार मंजिला भवनों का निर्माण किया जा रहा है। ये भवन अत्याधुनिक शैक्षणिक सुविधाओं से लैस होंगे। प्रोजेक्ट मैनेजर मुकेश सक्सेना ने बताया कि यह विश्वविद्यालय एक अद्वितीय शैक्षणिक संस्थान होगा, जो भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने और उसे आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करने का कार्य करेगा। विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य छात्रों को भारतीय संस्कृति, विशेषकर रामायण की गहराइयों में उतरने का अवसर प्रदान करना है। यहां छात्र और शोधकर्ता रामायण के विभिन्न पहलुओं पर गहन अध्ययन कर सकेंगे। रामायण केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि यह जीवन जीने की एक प्रणाली है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए लाभदायक होगी।

इस विश्वविद्यालय में विभिन्न अंडर ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट व शोध पाठ्यक्रमों की पेशकश की जाएगी, जो छात्रों को बहुआयामी ज्ञान प्रदान करेंगे। विश्वविद्यालय में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा देने के लिए अनुभवी शिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी। इसके साथ ही, यह विश्वविद्यालय स्थानीय और राष्ट्रीय दोनों स्तर पर शोधकर्ताओं और विद्वानों के लिए एक आकर्षण का केंद्र बनेगा। यह विश्वविद्यालय न केवल छात्रों के लिए ज्ञान का एक केंद्र बनेगा, बल्कि रामायण जैसे प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन के माध्यम से भारतीय संस्कृति को भी संरक्षित और प्रोत्साहित करेगा।

22 अक्तूबर को निदेशालय घेरेंगे माध्यमिक शिक्षक

संवाददाता–संतकबीरनगर। संतकबीरनगर जिले के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के सदस्य 22 अक्तूबर को लखनऊ शिक्षा निदेशक माध्यमिक के कार्यालय पर आयोजित धरने में शामिल होंगे। इस बावत मौलाना आजाद इंटर कालेज खलीलाबाद में हुई बैठक में तैयारियों की समीक्षा की गई।

प्रदेश मंत्री संजय द्विवेदी ने कहा कि लम्बित मांगों को लेकर 22 अक्तूबर को माध्यमिक शिक्षक निदेशालय का घेराव करेंगे। इसमें भागीदारी की तैयारी सभी शिक्षक जुट जाएं। जिले के शिक्षकों की अच्छी भागेदारी रहेगी। उन्होंने सरकार से दीपावली से पूर्व वेतन भुगतान करने की मांग की है। दीपावली से पहले महंगाई भत्ते व बोनस की घोषणा न होने पर नाराजगी जताई है। इस वर्ष दीपावली 31 अक्टूबर को पड़ रही है। जिससे लगातार अवकाश होने के नाते शिक्षक कर्मचारियों को समय से वेतन नहीं मिल पाएगा। परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए पूर्व वर्षों की भांति सरकार शिक्षक कर्मचारियों को एडवांस में दीपावली से पहले वेतन का भुगतान करें। श्री द्विवेदी ने कहा कि महंगाई दिनों दिन बढ़ रही है। हमेशा छमाही महंगाई भत्ते की घोषणा दीपावली से पूर्व हो जाया करती थी, लेकिन राज्य सरकार ने अभी तक कर्मचारियों के डीए बढ़ोतरी की घोषणा नहीं की है जिससे लोगों में नाराजगी है। अभी तक बोनस की भी घोषणा नहीं हुई है।

49 पशुपालकों में दवा का वितरण

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य शिविर का गुरुवार को बर्डपुर नंबर तीन के टोला भैरहवा में आयोजन किया गया। इसमें पशुपालकों को निरुभुल्क दवा दिया गया। इस शिविर में गाय, भैस, मुर्गी, बकरी, बतख, भेड़ आदि की जांच कर लगभग 49 पशु पालकों को दवा दी गई। इस दौरान डॉ. विनोद कुमार पांडेय, फार्मासिस्ट डीपी सिंह, बेचन प्रसाद, दिनेश कुमार, निसार अहमद आदि मौजूद रहें।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

नम्बर मुकदमा 3057/2024

अदालत– श्रीमान जिलाधिकारी महोदय बस्ती सदर जिला–बस्ती

रामदयाल

बनाम

सरकार

1. नेबूलाल पुत्र रामलगन साकिन रौतापार 2. कमला देवी पत्नी शीतल प्रसाद साकिन नडार तप्पा मथौली परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला बस्ती 3. ग्राम पंचायत रौतापार द्वारा अध्यक्ष साकिन रौतापार तप्पा मथौली परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला बस्ती 4. सरकार उ0प्र0 द्वारा जिलाधिकारी महोदय बस्ती

तारीख पेशी 30–10–2024

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 30 माह 10 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असलतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाफिक किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजवीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज जो जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 17 माह 10 सन 2024 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

प्रतियोगिता के मेधावियों का हुआ सम्मान

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। कस्बा में स्वामिमान समिति कार्यालय पर गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के उपलक्ष्य में चल रहे जागरूकता कार्यक्रम के तहत बालिकाओं से संपर्क करने के साथ ही बालिका मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर किशोरियों के साथ चित्रकला प्रतियोगिता हुई। चित्रकला में प्रथम स्थान पाने वाली मनीषा चौधरी, दूसरा स्थान पर रही अमीषा निषाद और तीसरे स्थान पर आने वाली साधना भारती को पुरस्कृत किया गया। सीएचसी की चिकित्साधिकारी डॉ. प्रीति शुक्ला ने कहा कि सभी को मन लगाकर पढ़ना चाहिए। खेलकूद में भी सक्रिय भागीदारी निभाएं। कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से ही सफलता हासिल होती है। इस अवसर पर विनोद प्रजापति, ममता वर्मा, प्रियंका चौधरी, सुमन साहनी, विमलेश, रीता त्रिपाठी आदि मौजूद रहीं।

जिला अस्पताल में अच्छे व्यवहार का दिया जा रहा है प्रशिक्षण

संवाददाता–अयोध्या। सरकारी अस्पतालों में मरीज व तीमारदारों से यहां के मेडिकल स्टाफ व कर्मचारियों के द्वारा खराब व्यवहार किए जाने की शिकायतें मिलती रहती है। इसके लिए स्वास्थ्य विभाग ने अपने कर्मचारी व मेडिकल स्टाफ को मरीज व तीमारदार के प्रति किए जाने वाले व्यवहार को लेकर प्रशिक्षित करने का निर्णय लिया है। जिसमें जिला अस्पताल में पहले चरण में गुरुवार को सुरक्षाकर्मियों को ट्रेनिंग दी गई। कई बार अस्पताल में मौजूद स्टाफ व तीमारदार के बीच में विवाद व मारपीट के मामले सामने आते रहते है। जिसमें मामला बिगड़ जाने पर पुलिस को दखल भी देना पड़ता है। विवादों से अस्पताल की छवि पर भी असर पड़ता है। जिला अस्पताल में बीते दिन मेडिकल स्टाफ व तीमारदार के बीच विवाद के कई मामले सामने आए। वहीं अस्पताल के सुरक्षागार्डों व सफाईकर्मियों के साथ तीमारदारों की नोकझोंक अक्सर होती रहती है। जिसको लेकर जिला अस्पताल में मेडिकल स्टाफ व कर्मचारियों को ट्रेनिंग दी जा रही है।

गुरुवार को अस्पताल के रेडक्रास सोसाईटी भवन में प्रशिक्षण की शुरुआत हुई। जिसमें जिला अस्पताल प्रबन्धक राजेन्द्र तिवारी ने प्रोजेक्टर पर सुरक्षागार्डो को उनकी दायित्व व व्यवहार के विषय में विस्तार से बताया। इस सम्बंधित बुकलेट भी सुरक्षागार्डो को दी गई। मैनेजर राजेन्द्र तिवारी ने बताया कि छह राउन्ड में मरीज व तीमारदारों को ट्रेनिंग दी जानी है। जिसमें पहले चरण में सुरक्षाकर्मियों को ट्रेनिंग दी गई। इसके बाद वार्ड आया, वार्ड व्याय, सफाई कर्मी, फार्मासिस्ट व सबसे अंत में स्टाफ नर्स को अच्छे व्यवहार के प्रति प्रशिक्षित किया जाएगा। जिला अस्पताल के अधीक्षक डा. विपिन वर्मा ने बताया कि मैनेजर राजेन्द्र तिवारी को लखनऊ में मरीज व तीमारदार के साथ किए जाने वाले व्यवहार की ट्रेनिंग मिल चुकी है। जिसके बारें वह अस्पताल के मेडिकल स्टाफ व कर्मचारियों को जानकारी देंगे।

बाजार में करवा चौथ की तैयारी से बढ़ने लगी है रौनक

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले में बाजार में करवा चौथ की तैयारी को लेकर खरीदारी होने से रौनक बढ़ने लगी है। पर्व को मनाने के लिए सप्ताह भर पहले से ही महिलाएं बाजार में खरीदारी शुरू कर दी हैं। पति भी पर्व पर अपनी पत्नी को गिफ्ट देने के लिए तरह–तरह के उपहारों की खरीदारी कर रहे हैं। अपने सुहाग की दीर्घायु व कुशलता के लिए रखे जाने वाले व्रतों में करवा चौथ व्रत बेहद निष्ठापूर्ण व श्रद्धा भाव से उपवास रखने का त्योहार है। सुहागिन महिलाएं अपने पति की दीर्घायु के लिए यष्ह व्रत करती हैं। यह पर्व 20 अक्टूबर को मनाया जाएगा। इस पर्व को पतिव्रता सती सावित्री के पति सत्यव्यान की कथा से जोड़ा जाता है। पत्नी के हठ के आगे यमराज ने सत्यवान के प्राण लौटा दिए। इस त्योहार पर भगवान शिव परिवार की उपासना की जाती है। इस पर्व पर चंद्रदेव को अर्घ्य देने तक निर्जला व्रत महिलाएं रहती हैं। चलनी में पति को देखने के बाद ही व्रत का समापन होता है। पर्व पर महिलाएं 16 श्रृंगार कर सज कर तैयार होती हैं। यही कारण है कि महिलाएं सुहाग से जुड़ी समाग्रियों की तैयारी महिलाएं तेजी से कर रही हैं।

करवा चौथ पर्व की एक सप्ताह पहले से ही तैयारी शुरू हो गई है। इसी के साथ बाजार में रौनक बढ़ने लगी है। शहर के लगभग सभी कपड़े की दुकानों पर पर महिलाओं की भीड़ दिख रही है। कपड़े खरीदने के साथ उसे सिलवाकर समय से लेने के लिए भाग दौड़ की जा रही है। इसके अलावा पूजन सामग्री के लिए एक एक सामान जुटाए जा रहे हैं। महिलाएं करवा और चलनी के साथ साथ अन्य सामान खरीद रही हैं। सुगाह के सामग्रियों की खरीदारी के लिए श्रृंगार प्रसाधन के सामानों की खरीद कर रही हैं। नए चावल के आंटे के लिए किसानों से संपर्क किया जा रहा है। जिन किसानों की धान की फसल तैयार हो गई है। उनसे चावल की खरीद करने के प्रयास हो रहे हैं।

करवा चौथ पर सोलह श्रृंगार के लिए एक दिन पहले ही मेहंदी लगवाने की भागदौड़ मची रहती है। इससे बचने के लिए कुछ तो घरों पर खुद मेंहदी लगाती हैं। वहीं कुछ महिलाएं ब्यूटीपार्लर में संपर्क कर रही हैं। अपनी सुविधा के अनुसार टाइम स्लाट की बुकिंग करा रही हैं।

हरियाणा में सरकार बनने पर दी बधाई

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। हरियाणा चुनाव में भाजपा की बड़ी जीत के बाद नायब सिंह सैनी ने दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इस अवसर पर क्षेत्र के भाजपा नेताओं ने खुशी व्यक्त की और सैनी को बधाई दी। उस्का बाजार। हरियाणा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की बड़ी जीत के बाद गुरुवार को नायब सिंह सैनी ने दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इस उपलब्धि पर क्षेत्र के भाजपाइयों ने खुशी जताई। भाजपा नेता हेमंत जायसवाल, ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि रामसुरेश चौहान, राकेश आर्य, सुनील जायसवाल, सत्यप्रकाश वर्मा, अशोक जायसवाल आदि ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को बधाई दी है।

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया कामप्लेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह

संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय– चर्तुभुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय– आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय– इलाहीबाग गोरखपुर।

मो0 09450567450 9336715406,

ई.मेल bhartiyabasti@yahoo.com bhartiyabasti@gmail.com